Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

ज्यूं अविनीत ने अविनीत मिल्यां,
अविनीतपणो सिखावे।
पछे बुटकनां नें बलद ज्यूं,
दोनूं जणा दुख पावे।।

अविनीत कोई अपने जैसा मिलता है तो वह उसे औंधी सीख देता है। फिर कान कटे गधे और बैल की भांति दोनों दुःखी बन जाते हैं।

– आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 26 • अंक 09 • 02 दिसम्बर- 08 दिसम्बर, 2024 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 30-11-2024 • पेज 12 • ₹ 10 रुपये

अहिंसा और मैत्री से संभव है आध्यात्मिक विकास : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

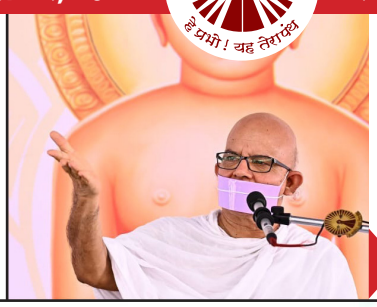

इहलोक और परलोक में कल्याणकारी है श्रमण धर्म : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 11

Address Here

जैन धर्म के दो प्रभावक आचार्यों का हुआ आध्यात्मिक मिलन

मंगल प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ प्रयास है धर्म की आराधना : आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमणजी की आत्मीयता और प्रेम ही हमें यहाँ खींच लाया है : आचार्यश्री शिवमुनि

सिटी लाइट, सूरत।
24 नवम्बर, 2024

जैन धर्म के दो प्रभावक आचार्य - जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी एवं स्थानकवासी श्रमण संघ के आचार्य शिवमुनि जी का तेरापंथ भवन में आध्यात्मिक आत्मीय मिलन हुआ। इस सात्विक मिलन की पावन बेला में आचार्यश्री महाश्रमणजी ने फ़रमाया - हमारी दुनिया में मंगलकारी कार्य प्रिय होते हैं। व्यक्ति मंगल की प्राप्ति के लिए कई प्रकार से प्रयास करता है। चातुर्मास के प्रवेश के लिए भी शुभ मुहूर्त देखा जाता है। मंगल की प्राप्ति के लिए सबसे श्रेष्ठ प्रयास है– धर्म की आराधना। धर्म ही उत्कृष्ट मंगल है। अहिंसा, संयम, और तप धर्म का स्वरूप हैं।

हर धर्म वाला व्यक्ति सिद्ध हो सकता है। हम जैन शासन से जुड़े हैं, जहाँ वीतरागता का महत्व है। भगवान महावीर से संबद्ध वर्तमान जैन शासन में अनेक आम्नाय हैं। चातुर्मास के दौरान तपस्या का

विशेष क्रम चलता है। सूरत चातुर्मास के लिए हमें भगवान महावीर विश्वविद्यालय का स्थान मिला, जो शिक्षा का एक बड़ा केंद्र है। यदि इन शिक्षण संस्थानों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को नैतिकता और नशामुक्ति के अच्छे संस्कार मिलें, तो यह आने वाली पीढ़ी के निर्माण में सहायक होगा।

चातुर्मास के पश्चात हमने वृहत्तर सूरत में भ्रमण किया। आज अध्यात्म ज्योति आचार्यश्री शिवमुनिजी का आगमन हुआ। अतीत में भी पाली, लुधियाना, दिल्ली, सूरत में आपसे मिलना हुआ है। गुरुदेव श्री तुलसी के समय से ही यह आत्मीयता बनी हुई है। आचार्यश्री का वात्सल्य और स्नेह हमें प्राप्त होता रहा है। हम सभी अपनी-अपनी साधना के साथ धर्मोद्योत करते रहें।

आचार्यश्री ने कहा कि जैन साधुओं का विहार और चर्या साधना के साथ जनोपकार का माध्यम भी बनता है। सूरत चातुर्मास में साध्वी प्रमुखाजी, साध्वीवर्याजी, मुख्य मुनिजी और अनेक साधु-साध्वियाँ साथ में रहे। मुख्य मुनि ने जैन विश्व भारती संस्थान से आगम साहित्य में पर्यावरण पर डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की है। अन्य साधु-साध्वियाँ भी विभिन्न विषयों पर शोध कर रहे हैं। स्वाध्याय और ध्यान-साधना का क्रम सतत चलना चाहिए।

श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर आचार्यश्री शिवमुनिजी ने अपने उद्बोधन में कहा - आचार्यश्री महाश्रमणजी की कृपा असीम है। भगवान महावीर अब हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनकी अहिंसा, मैत्री, करुणा और साधना हमारे पास हैं। आचार्यश्री महाश्रमणजी की साधना, आत्मीयता और प्रेम ही हमें यहाँ खींच लाया है। निर्ग्रंथ वह होता है जो ऋजु होता है। (शेष पेज 2 पर)

इन्द्रियातीत सुख पाने का करें प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

सिटी लाइट, सूरत।
23 नवम्बर, 2024

जिन शासन के उज्ज्वल नक्षत्र आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हर व्यक्ति सुखी जीवन जीना चाहता है। सुख दो प्रकार के होते हैं—एक शारीरिक (भौतिक) सुख और दूसरा आध्यात्मिक सुख। पहला ऐन्द्रिय सुख है, और दूसरा इन्द्रियातीत सुख। कर्म-निर्जरा के द्वारा जो आनंद मिलता है, वह सच्चा सुख है।

आठ प्रकार के कर्म बताए गए हैं। इनमें चार कर्म 'घाति' कहलाते हैं, और चार कर्म 'अघाति'। घाति कर्म आत्मा या आत्मा के गुणों का ह्रास करने वाले होते हैं। अघाति कर्म आत्मा के गुणों को नष्ट तो नहीं करते, लेकिन भौतिक सुख-दुःख के लिए जिम्मेदार होते हैं। चार घाति कर्म पूरी तरह से अशुभ और पापात्मक हैं, जबकि बाकी चार अघाति कर्म शुभ (पुण्य) और अशुभ (पापात्मक) दोनों हो सकते हैं। सामान्य व्यक्ति भौतिक सुख की कामना करता है, जो पुण्य के प्रभाव से प्राप्त होता है। अनुकूल परिस्थितियाँ और भौतिक सुविधाएँ पुण्य कर्मों का परिणाम होती हैं।

भाग्य दो प्रकार के होते हैं:

1. मूर्त भाग्य : जो पुण्य कर्मों से प्राप्त होता है, जैसे भौतिक सुख या दुःख।
2. अमूर्त भाग्य : जो क्षयोपशम के परिणामस्वरूप मिलता है, जैसे बुद्धि, अच्छा स्वभाव, और अवरोधों की कमी।

सुखी जीवन के लिए कुछ सूत्र बताये गए हैं :

- स्वयं को तपाओ और सुकुमारता का त्याग करो।
- सुविधावादी प्रवृत्ति इतनी अधिक न हो जाए कि कठिन कार्य करने की इच्छा ही खत्म हो जाए। (शेष पेज 2 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
02 दिसम्बर- 08 दिसम्बर, 2024

बुरे कर्मों से बचकर करें सदाचार का पालन : आचार्यश्री महाश्रमण

उधना।
21 नवम्बर, 2024

चार दिवसीय उधना प्रवास का अंतिम दिन। युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फ़रमाया कि एक राजा अपने राज्य से जुड़े तीन प्रमुख कर्तव्यों का पालन करता है:

1. सज्जनों की रक्षा करना।
2. दुर्जनों पर अनुशासन और अंकुश लगाना।
3. प्रजा का भरण-पोषण करना।

राजा बनने में पुण्य का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है। राजा बनने के लिए अर्हता और गुण भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। एक दृष्टांत के माध्यम से पूज्य प्रवर ने प्रेरणा देते हुए कहा - 'कर भला तो हो भला। जो दूसरों का बुरा करता है, उसका बुरा ही होता है। कर्मों का फल भोगे बिना या उनका क्षय किए बिना छुटकारा नहीं मिलता। इसलिए हमें बुरे कर्मों से बचना चाहिए और सदाचार तथा धर्माचरण का पालन करना चाहिए।

विगत दिनों कालधर्म प्राप्त हुए मुनिश्री विजयराज जी स्वामी की स्मृति सभा का आयोजन पूज्य प्रवर की सन्निधि में हुआ। पूज्यवर ने उनका संक्षिप्त परिचय देते हुए बताया कि वे लगभग 94 वर्ष की आयु में देवलोकगमन को प्राप्त हुए। उनका 77 वर्षों का संयममय जीवन अत्यंत प्रेरणादायक था। वे जीवन-विज्ञान के प्रचार-प्रसार में समर्पित रहे और उनमें काफी विनम्रता देखने को मिली। पूज्यवर ने मध्यस्थ भावना के अंतर्गत चार लोगस्स का ध्यान करवाया।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी, मुख्यमुनिश्री महावीर कुमार जी और मुनि कोमलकुमारजी ने उनके प्रति आध्यात्मिक मंगल भावनाएं व्यक्त की।

कार्यक्रम में टीपीएफ उधना के नव निर्वाचित अध्यक्ष हिमांशु चपलोत ने अपने भाव प्रकट किए। पूर्व विधायक विवेक भाई पटेल और उधना के विधायक नरेंद्र भाई पटेल ने पूज्यवर के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि कुमारश्रमणजी ने किया।

पृष्ठ 1 का शेष

आचार्यश्री शिवमुनि जी का...

आपकी सरलता हमें आपके पास बुला लेती है। जब भी आपसे मिलना होता है, वही आत्मीयता और प्रेम महसूस होता है। आपके साथ लगता नहीं हम दो हैं, हम एक ही हैं। मानों एक वृक्ष की दो शाखाएं हैं। आपने संवत्सरी एकता की शुरुआत की, वह अपने आप में एक मिसाल है, और भी अब इसमें जुड़ते चले जाएंगे। हम पहले भी एक थे, अब भी एक हैं आगे भी एक रहेंगे।

भगवान महावीर का चतुर्विध धर्मसंघ तीर्थंकरों द्वारा निर्मित तीर्थ है, जो तिरने और तारने योग्य है। मोक्ष प्राप्ति के लिए हमें भेद-विज्ञान का सहारा लेना चाहिए। यह शरीर जड़ है, लेकिन आत्मा शाश्वत और निराकार है। हमें आत्मा को समय देना चाहिए। आत्मा को जानने और साधना करने में ही मोक्ष का मार्ग है।

सिद्ध भगवान में जो आत्मा है, वही आत्मा हमारे भीतर है। हम 'सोऽहम्' की साधना करें। आत्मा के आठ गुण हम सभी में समान रूप से विद्यमान हैं। जब तक आत्मा और शरीर में भेद नहीं होगा, साधना संभव नहीं होगी। धर्म-ध्यान से शुक्ल ध्यान की ओर अग्रसर हों। मोह का क्षय ही मोक्ष है।

इस अवसर पर श्रमण संघ के मंत्री शिरीष मुनिजी और मुख्य मुनि महावीर कुमार जी ने अपने हृदयोद्गार प्रकट किए। शुभम मुनिजी ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित एवं डॉ. साध्वी आरोग्यश्रीजी द्वारा अनुवादित पुस्तक Preksha Pathy का लोकार्पण श्री चरणों में किया गया। आगामी 5, 6, 7 मई 2025 को पालनपुर में होने वाले आचार्यश्री के जन्मोत्सव और पट्टोत्सव कार्यक्रम के लोगो का अनावरण हुआ।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा सूरत द्वारा आचार्य श्री महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति अध्यक्ष संजय सुराणा का अभिनंदन पत्र भेंट कर सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि कुमारश्रमणजी ने किया।

इन्द्रियातीत सुख पाने का...

- भौतिक इच्छाओं को सीमित रखो।
- दूसरों को सुखी देखकर ईर्ष्या मत करो और दूसरों के दुःख पर आनंदित मत हो।
- सफलता के लिए बार-बार प्रयास करो, सफलता परिश्रम के जल से सींची जाती है।
- पुरूषार्थ भी सम्यक् होना चाहिए।

आवश्यक है कि पदार्थों के प्रति अवांछनीय राग न हो। केवल वर्तमान का नहीं, बल्कि भविष्य का भी ध्यान रखें। वर्तमान में पूर्व के पुण्य का फल भोग रहे हैं, लेकिन भविष्य के लिए धर्माराधना करें।

मोक्ष प्राप्ति के प्रयास करें। सच्चा सुख आंतरिक होता है। भौतिक वस्तुएँ न भी हों, तो भी सुखी रह सकें। यही आध्यात्मिक सुख है, और इसे पाने का प्रयास करना चाहिए।

अहिंसा और मैत्री से संभव है आध्यात्मिक विकास : आचार्यश्री महाश्रमण

सिटी लाइट, सूरत।
22 नवम्बर, 2024

तेरापंथ के भास्कर आचार्यश्री महाश्रमणजी उधना का चार दिवसीय प्रवास समाप्त कर सूरत के सिटी लाइट स्थित तेरापंथ भवन में पधारे। महाश्रमिक पूज्यवर कई स्थानों पर श्रावक-श्राविकाओं को दर्शन देने पधारे। इस कारण पूज्य प्रवर का प्रवचन प्रातः कालीन समय में ना होकर रात्रि काल में हुआ।

पूज्यवर ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान कराते हुए फरमाया कि अहिंसा शब्द बहुत प्रसिद्ध है। 2 अक्टूबर को अहिंसा दिवस भी मनाया जाता है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने अहिंसा यात्रा की थी, और बाद में भी अहिंसा यात्रा चली। अहिंसा से संबंधित एक अन्य तत्व है—मैत्री तत्व। मैत्री में अहिंसा तो विद्यमान है ही।

अहिंसा शब्द निषेधात्मक है, जबकि मैत्री शब्द में विधायकता है। हिंसा का न होना यानी किसी को न मारना, इस तरह से नकारात्मक रूप से जुड़ा तत्व अहिंसा है। वहीं, दूसरों का हित चिंतन मैत्री में और अधिक जुड़ जाता है। जैसे मृषावाद वर्जन (झूठ का त्याग) और सत्य भाषण (सत्य का कहना) एक जैसे लगते हैं, पर उनमें भी अंतर है। वैसे ही अहिंसा और मैत्री में अंतर है।

साधु मृषावाद का त्याग करता है, पर हर सत्य बात बोलना आवश्यक नहीं होता। साधु हिंसा का त्याग करता है, पर दूसरों का हित चिंतन कर सकता है। जहाँ प्रवृत्ति होती है, वहाँ मैत्री हो सकती है। चौदहवें गुणस्थान में अहिंसा तो होती है, पर मैत्री नहीं, क्योंकि वहाँ प्रवृत्ति नहीं होती। जहाँ एकांत निवृत्ति होती है, वहाँ सत्य भाषण भी संभव नहीं होता।

अहिंसा निवृत्ति है, जबकि मैत्री प्रवृत्ति है। मृषावाद में गुप्ति (संयम) होती है, जबकि सत्य भाषण में समिति (सावधानी) होती है। इसी प्रकार, अहिंसा में गुप्ति है, तो मैत्री में समिति। जिसके जीवन में मृषावाद का त्याग और मैत्री का भाव होता है, उसका आध्यात्मिक विकास हो सकता है।

प्रातः कालीन कार्यक्रम में साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने कहा कि जो आत्मा को शुद्ध करने का साधन है, वही धर्म है।

धर्म उत्कृष्ट मंगल है। अहिंसा, संयम और तप ही धर्म है। जिसके मन में धर्म रम गया है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं। भगवान ने आगमों में छह जीव निकायों की व्याख्या की है। हमें स्थावर जीवों के प्रति भी दया और करुणा का भाव रखना चाहिए।

पूज्यवर के स्वागत में स्थानीय सभाध्यक्ष मुकेश बैद एवं समाज ने सामूहिक गीत के माध्यम से अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि कुमारश्रमणजी ने किया।

नवगठित सभा का शपथ ग्रहण समारोह

कीर्तिनगर, दिल्ली।

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में पन्नालालजी बैद के परिसर में नवगठित कीर्तिनगर सभा का शपथ ग्रहण समारोह गरिमामय उपस्थिति में समायोजित हुआ। साध्वीश्री ने अपने उद्बोधन में कहा- तेरापंथ धर्मसंघ एक आचार्य के नेतृत्व में चलने वाला प्राणवान धर्मसंघ है। इस गण को गौरवशाली आचार्यों का नेतृत्व प्राप्त हुआ है और वर्तमान में परमपूज्य गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमणजी का निराला नेतृत्व प्राप्त हो रहा है। आचार्यवर के नेतृत्व में धर्मसंघ प्रांशु-शिखरों का स्पर्श कर रहा है।

संघ की गौरव वृद्धि में शासन की सभा-संस्थाओं का भी बड़ा योगदान रहा है। संस्था शिरोमणी महासभा के अन्तर्गत सैंकड़ों सभाएं काम कर रही हैं। दिल्ली महानगर में अब तक बीस सभाएं थीं, आज दिल्ली में इक्कीसवीं सभा का गठन हुआ है।

पन्नालाल बैद ने हमारी प्रेरणा को स्वीकार किया और आज उनका श्रम सार्थक हो गया है। जब हमने कीर्तिनगर में एक सप्ताह का प्रवास किया, तब लगा यहां सभा की विशेष उपयोगिता है। श्रावक समाज ने हमारी भावना को समझा एवं आज भावना ने साकार रूप लिया है। महासभा उपाध्यक्ष संजय खटेड ने भी अच्छा श्रम किया।

साध्वी श्री ने कहा नवगठित सभा में पूरी युवा टीम है। युवकों का उत्साह एवं जज्बा अलग ही होता है। अध्यक्ष मनोज एवं मंत्री आलोक की पूरी टीम कीर्तिनगर की कीरत को दिल्ली में फैलाए। वरिष्ठ-जन से अनुभव लेकर अपने चिंतन व विज़न से सभा को निरन्तर सक्रिय बनाए रखें, अपनी नेतृत्व क्षमता से नए इतिहास का सृजन करें और धर्मसंघ की रीति-नीति के जानकार बनकर सभा को गतिशील रखें।

साध्वी कर्णिकाश्रीजी, डॉ. साध्वी सुधाप्रभा जी, साध्वी समत्वयशाजी एवं साध्वी मैत्री प्रभाजी ने प्रेरक गीत का संगान कर नवोन्मेषी कार्य करने की प्रेरणा दी। जैन विश्व भारती के उपाध्यक्ष पन्नालाल बैद ने कहा कि हमारी कीर्तिनगर सभा का गठन पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद एवं साध्वी अणिमाश्री जी की सिद्ध वाणी एवं वाक्शक्ति का का ही परिणाम है। साध्वीश्री की बलवती प्रेरणा ने ही इस असंभव से लगने वाले कार्य को संभव बनाया है। मुझे लगता है यह नवगठित सभा टीम सबके लिए अनुकरणीय बनेगी। महासभा उपाध्यक्ष संजय जी खटेड ने अध्यक्ष मनोज जैन को शपथ दिलवाई। दिल्ली सभाध्यक्ष सुखराज सेठिया ने पदाधिकारियों को, मांगीलालजी सेठिया एवं के. सी. जैन ने कार्यकारिणी सदस्यों को अपने-अपने पद की शपथ दिलवाई। उपस्थित पदाधिकारियों एवं गणमान्य व्यक्तियों ने नवगठित टीम को शुभकामनाएँ संप्रेषित की। अध्यक्ष मनोज जैन ने अपनी टीम की घोषणा के साथ अपने विचार व्यक्त किए। मंत्री आलोक बैद ने सबका आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन राजुल मणोत ने किया।

आध्यात्मिक मिलन समारोह में झलका विनय व सम्मान का भाव

दहिसर।

स्वामी नारायण मंदिर परिसर दहिसर में साध्वी पुण्ययशाजी एवं साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञाजी का आध्यात्मिक मिलन हुआ। भायन्दर चातुर्मास कर कर्नाटक की और विहाररत ओर कांदिवली चातुर्मास सम्पन्न कर गुरु निर्देशानुसार मुंबई विहरण के दौरान दहिसर में हुए मिलन समारोह में साध्वी पुण्ययशाजी ने कहा तेरापंथ धर्म संघ की अनुशासन शैली, समर्पण का शौर्य और विनम्रता की परम्परा प्रणम्य है। हमें तेजस्वी, यशस्वी गुरु परम्परा प्राप्त है, यह हमारा सौभाग्य है। वर्तमान में पूज्य गुरूदेव महाश्रमण जी अपनी तप साधना और श्रम से संघ का गौरव शत गुणित कर रहे हैं। उन्होंने कहा साध्वी डॉ मंगलप्रज्ञाजी पूना शहर से साध्वीप्रमुखाश्री द्वारा प्रदत्त पावन संदेश लेकर आई हैं। एक प्रकार से हमारा यह प्रथम मिलन यादगार बन रहा है। संदेश का हर शब्द हमारे भीतर ऊर्जा का संचार करने वाला है। साध्वी मंगलप्रज्ञा जी में विद्वता के साथ विनम्रता के उन्नत भाव हैं, प्रज्ञा की निर्मलता है और अनुभवों की सम्पदा है। तेरापंथ संघ की प्रभावना में इनका महत्वपूर्ण योगदान है। साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी ने कहा - हमारा परम लक्ष्य है - वीतरागता की साधना। आज का मिलन वीतराग साधकों का मिलन है। यह मिलन आन्तरिक आत्म उत्साह को पैदा करता है। हम सौभाग्य शाली हैं - संघ का नेतृत्व करने वाले गुरू हमारा कितना ध्यान रखते हैं। इतने दिन तक वंदनीया प्रमुखाश्रीजी द्वारा प्रदत्त संदेश को हमने सहेज कर रखा, आज उसे साध्वी पुण्ययशाजी के हाथों में सममिंत कर विशेष आनन्द की अनुभूति कर रहे हैं। आज के मिलन का महत्वपूर्ण हेतु यह पावन संदेश भी है। उन्होंने कहा - साध्वी पुण्ययशाजी शान्त मधुर स्वभावी, सेवाभावी, प्रभावी व्यक्ति की धनी हैं। साध्वी सुदर्शनप्रभाजी, साध्वी अतुलयशाजी, साध्वी राजुलप्रभाजी, साध्वी चैतन्यप्रभा जी और साध्वी शौर्यप्रभा जी ने सामूहिक संगान के साथ 'मिलन न्यूज़ चैनल' कार्यक्रम की प्रस्तुति दी। साध्वी विनीतयशाजी, साध्वी वर्धमानयशा जी एवं साध्वी बोधिप्रभाजी ने मधुर गीत का संगान किया। श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउण्डेशन के पूर्व अध्यक्ष विनोद बोहरा, तेरापंथ सभा कांदिवली अध्यक्ष ज्ञानमल भंडारी, तेयुप अध्यक्ष राकेश सिंघवी, तेरापंथ सभा भायन्दर अध्यक्ष दिलीप बाफना, आदि अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने आध्यात्मिक मिलन के अवसर पर हदयोद्गार व्यक्त करते हुए साध्वी वृन्द की आगामी यात्रा की मंगलकामना की।

दहिसर तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने सामूहिक संगान कर अपनी भावनाएं व्यक्त की। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी डॉ. शौर्यप्रभाजी ने किया। आभार ज्ञापन महिला मंडल मंत्री पिस्ता दुगड़ ने किया।

'कैसे हो अनासक्त भावना का विकास

कोयम्बतूर।

अभातेममं के निर्देशानुसार स्थानीय मंडल ने 'कैसे हो अनासक्त भावना का विकास' कार्यशाला का आयोजन मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में आयोजित किया। कार्यशाला की शुरुआत मुनिश्री के नमस्कार महामंत्र उच्चारण से हुई। मंडल की बहनों के द्वारा सुमधुर प्रेरणा गीत का संगान किया गया। स्थानीय मंडल अध्यक्षा मंजू सेठिया ने वक्तव्य के द्वारा सभी का स्वागत व अभिनंदन किया। मुनि दीप कुमार जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि अनासक्ति भावना का यह अर्थ नहीं है कि हमें किसी भी वस्तु या व्यक्ति की संगति का आनंद उठाने की अनुमति नहीं। अनासक्ति भावना का अर्थ यह है कि हम किसी व्यक्ति या वस्तु विशेष के मोह में न जकड़े। हमें यह भान हो कि यह सब अस्थाई व अशाश्वत है। मुनिश्री ने सरल भाषा में विसर्जन के विषय पर भी प्रकाश डाला। मुनि काव्य कुमार जी ने कहा कि भौतिक वस्तुओं और सांसारिक विषयों के प्रति आसक्ति रखना अच्छा नहीं है। स्थायी आनंद तो अनासक्त भावना से प्राप्त होता है। कार्यशाला में लगभग 80 सदस्यों की उपस्थिति रही। धन्यवाद ज्ञापन उपाध्यक्ष सुशीला बाफना ने किया।

आनंदमय संयम जीवन है सर्वश्रेष्ठ

भीलवाड़ा।

साध्वी कीर्तिलता जी व साध्वी शांतिलता जी के संयम जीवन की स्वर्ण जयंती का कार्यक्रम तेरापंथ नगर में आयोजित हुआ। साध्वीवृंद ने नमस्कार महामंत्र व परमेष्ठी वंदना से कार्यक्रम की मंगल शुरुआत की। साध्वी पूनमप्रभाजी एवं साध्वी श्रेष्ठप्रभाजी ने साध्वीद्वय के प्रशस्त आध्यात्मिक जीवन के गुणों का वर्णन करते हुए 50 वर्ष के संयम पर्याय जीवन का गीतिका द्वारा प्रस्तुतीकरण किया। साध्वी कीर्तिलताजी ने अपने 50वर्ष के संयम जीवन की यात्रा के स्वर्णिम अवसर पर भाव प्रकट करते हुए कहा कि देव, गुरु, धर्म की कृपा से और तीन आचार्यों की सन्निधि में यह यात्रा निर्बाध गति से आगे बढ़ी। हृदय की आँख जब खुलती है तब दीक्षा होती है। आपने अपनी सहवर्ती साध्वियों के श्रम, सेवा, समता, सहनशीलता, विनय, वात्सल्य व कार्यशैली की प्रसन्न हृदय से सराहना की। आपने सांसारिक व आध्यात्मिक जीवन की तुलना में दिल की गहराई से इस आध्यात्मिक संयममय जीवन को आनंदमय, सर्वश्रेष्ठ बताया। आपने देशभर में 55 हज़ार किलोमीटर की पद यात्रा के खट्टे-मीठे वृत्तांत सुनाए।

साध्वी शांतिलताजी ने अपने 50 वर्ष के संयम पर्याय जीवन की भावात्मक अभिव्यक्ति देते हुए गुरु के प्रति, अपनी सहोदरी साध्वी के प्रति कृतज्ञता के अहो भाव प्रकट किए। पूरी परिषद को अपने अनुभवों से सरोबार कर दिया। इस अवसर पर महिला मंडल प्रचार प्रसार मंत्री नीलम लोढ़ा ने कहा कि संघ के प्रति अटूट श्रद्धा, आस्था और समर्पण की मिसाल हैं - साध्वीवृंद, और उसी की फलश्रुति है कि आज आपसी आत्मीय स्नेह, वात्सल्य, प्रेम भाव आपके सभी के बीच प्रगाढ़ है। सकल तेरापंथ समाज ने सामूहिक अनुमोदना स्वर में साध्वीद्वय के संयम स्वर्ण जयंती पर आध्यात्मिक शुभ मंगल कामना की। साध्वीद्वय के संसार पक्षीय विशाल सकलेचा परिवार से 57 भाई बहिन बैंगलोर, चेन्नई से कार्यक्रम में शामिल हुए। मुंबई, शाहदा, उदयपुर, गंगाशहर इत्यादि अन्य क्षेत्रों से भी भाई-बहन सहभागी बने। सकलेचा परिवारजन एवं महिला मंडल भीलवाड़ा ने अनुमोदन गीतिका की प्रस्तुति दी।

संयम स्वर्ण जयंती की पूर्व संध्या पर भव्य धम्म जागरणा कार्यक्रम में बैंगलोर के गायक संदीप बरड़िया, स्थानीय गायक कलाकार ऋषि दुगड़, अंतिमा दक, दीपांशु झाबक, दक्ष बड़ोला, जिया चोरड़िया, सिद्धार्थ दुगड़ ने साध्वीद्वय के संयमित सुरभित जीवन की अनुमोदना गीतों के माध्यम से की। संचालन दिलीप रांका ने किया।

आत्मा का विमोचन कार्यशाला का आयोजन

पालघर। डॉ. साध्वी पीयूषप्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल पालघर द्वारा 'आत्मा का विमोचन' कार्यशाला का आयोजन किया गया। महिला मंडल अध्यक्षा संगीता चपलोत ने स्वागत वक्तव्य दिया। साध्वी डॉ.पीयूषप्रभाजी ने महावीर अष्टकम् का संगान किया। साध्वी दीप्तियशाजी ने चारों दिशाओं में लोग्गस का ध्यान, जप एवं मंगल भावना का प्रयोग करवाया। महावीर स्तुति के साथ कार्यशाला संपन्न हुई। सभा, तेयुप, किशोर मंडल, कन्यामंडल, ज्ञानशाला के लगभग 85 सदस्यों ने कार्यशाला में भाग लिया। प्रतियोगिता में शांतिलाल सिंघवी, नरेश राठौड व राजश्री शाह विजेता हुए। आभार ज्ञापन रंजना तलेसरा ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
02 दिसम्बर- 08 दिसम्बर, 2024

गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी के 111वें जन्मदिवस पर विविध कार्यक्रम

अमराईवाड़ी

साध्वी काव्यलताजी के सान्निध्य में आचार्य श्री तुलसी का 111वां जन्म दिवस सिंघवी भवन, अमराईवाड़ी में मनाया गया। साध्वी काव्यलताजी ने अपने उद्बोधन में कहा- आचार्य तुलसी तेरापंथ धर्म संघ के विकास पुरुष थे। उन्होंने छोटी उम्र में अपने आप को अष्टमाचार्य कालूगणी के चरणों में समर्पित कर दिया। संघ को ऊंचाईयां प्रदान करने के लिए आपने अनेकानेक अवदान दिए। पद का विसर्जन कर नये इतिहास का सृजन किया। साध्वी सुरभिप्रभाजी ने 'संघ को प्रयोगशाला तुमने बनाया' मधुर स्वरों से गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का मंगलाचरण तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष मुकेश सिंघवी ने मधुर स्वरों से किया। तेरापंथ सभा के उपाध्यक्ष दिनेश चंडालिया, कोषाध्यक्ष कैलाश बाफना ने अपने विचार व्यक किए। मधुर स्वरों से तेरापंथ महिला मण्डल ने अपनी भावनाएं व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन साध्वी ज्योतियशा जी ने किया।

राजसमन्द

साध्वी लब्धियशाजी के सान्निध्य में आचार्य श्री तुलसी का 111वां जन्मदिवस अणुव्रत दिवस के रूप में मनाया गया। साध्वीश्री ने कहा - आचार्य श्री तुलसी मानवता के मसीहा थे। उन्होंने मानवता के लिए पूरा जीवन समर्पित कर दिया। उनके क्रान्तिकारी विचारों का परिणाम था कि उन्होंने तेरापंथ की सीमा में आबद्ध न होकर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की। शुक्ल पक्ष दूज का चन्द्रमा विशेष होता है, उसकी तीन विशेषताएं होती हैं। वह बेदाग होता है, उसकी कलाएं बढ़ती जाती हैं, लोग उसकी प्रतीक्षा में रहते हैं। आचार्य तुलसी का जन्म भी कार्तिक शुक्ला दूज को हुआ। दूज के चन्द्रमा की भांति उनका जीवन चरित्र भी बेदाग रहा और उनके दर्शन की प्रतीक्षा सभी को रहती थी। साध्वी कौशलप्रभा जी ने अपने संयोजकीय वक्तव्य में कहा - आचार्य तुलसी का व्यक्तित्व, कर्तृत्व, नेतृत्व और वक्तृत्व विलक्षण था। इस अवसर पर अणुव्रत गौरव डॉ. महेन्द्र कर्णावट, अणुव्रत समिति राजसमन्द के अध्यक्ष अचल धर्मावत, उपाध्यक्ष रमेश माण्डोत, भिक्षु बोधि स्थल मंत्री सागर कावडिया ने अपने विचार रखे। महिला मण्डल अध्यक्षा सुधा कोठारी एवं बहनों ने समधुर गीतिका प्रस्तुत की। कार्यक्रम का शुभारंभ उपासिका चंचल कोठारी ने तुलसी अष्टकम से किया। आभार ज्ञापन भिक्षु बोधि स्थल अध्यक्ष हर्षलाल नवलखा ने किया।

राजाजीनगर

तेरापंथ धर्मसंघ के नवम अधिशास्ता गणाधिपति गुरुदेव आचार्य श्री तुलसी के 111वें जन्म दिवस के उपलक्ष पर तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम में किडनी प्रोफाइल टेस्ट का समायोजन किया गया, जिसमें 6 विभिन्न प्रकार की जांच यूरिया, सीरम क्रिएटिनिन, यूरिक एसिड, सोडियम, पोटासियम एवं क्लोराइड का समावेश किया गया। कुल 28 लोगों ने इसका लाभ लिया।

गंगाशहर

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, गंगाशहर द्वारा युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी का 111वां जन्म दिवस अणुव्रत दिवस के रूप में सेवाकेंद्र व्यवस्थापिका साध्वी चरितार्थप्रभा जी व साध्वी प्रांजलप्रभा जी के सान्निध्य में शांति निकेतन में आयोजित किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए साध्वी चरितार्थप्रभा जी ने कहा कि आचार्य श्री तुलसी ने मानवता के लिए अनेक अवदान दिए। उसमें से एक अवदान है- अणुव्रत। जब समाज को नैतिकता व चारित्रिक उत्थान की आवश्यकता थी, उसी समय आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया। हम अणुव्रत को सुनें, पढें और जीवन में उतारें। इस अवसर पर साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आचार्य श्री तुलसी भारतीय संत परंपरा के एक उत्कृष्ट उदाहरण हैं। उन्होंने 11 वर्ष की अल्प आयु में संयम रत्न धारण किया। साहित्य में कहा गया है कि गंगा पाप को, शशि ताप को तथा कल्प वृक्ष दीनता का हरण करता है लेकिन संत पुरुष पाप, ताप व संताप तीनों को ही दूर करने वाला होता है। आचार्य श्री तुलसी ने सद्गुणों को बांटकर लोगों की बुराइयों का हरण किया। उन्होंने अनेक स्थान पर कहा कि हमें नोट और वोट नहीं चाहिए, केवल आपकी खोट चाहिए। इस प्रकार लोगों को सही दिशा देने के लिए उन्होंने संपूर्ण जीवन में अनवरत प्रयास किये। साध्वी कृतार्थप्रभा जी एवं साध्वी तितिक्षाश्रीजी ने गीत के माध्यम से अपने भाव व्यक्त किये। कार्यक्रम का शुभारंभ भंवरलाल डाकलिया द्वारा मंगलाचरण से किया गया। तेरापंथ युवक परिषद के कोषाध्यक्ष रोशन छाजेड़, महिला मंडल उपाध्यक्ष प्रेमलता बोथरा, तेरापंथी महासभा के संरक्षक जैन लूणकरण छाजेड़ ने अपने विचार व्यक्त किये। संचालन सभा के कोषाध्यक्ष रतन लाल छलाणी ने किया।

विजयनगर

गुरुदेव तुलसी के जन्मोत्सव कार्यक्रम में साध्वी सिद्धप्रभा जी ने आचार्य तुलसी के प्रदत्त अवदानों के साथ अनेक संस्मरणों का उल्लेख करते हुए नारी शक्ति, युवा शक्ति और संपूर्ण मानवता के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए। नैतिकता और अनुशासन को सामान्य जन जीवन में प्रतिस्थापित करने हेतु अणुव्रत आंदोलन का महाअभियान चलाया। महिला समाज को घूंघट प्रथा से मुक्त करने में अहम भूमिका निभाई। आध्यात्मिक जगत में जैन धर्म को जन धर्म बनाने हेतु आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी को आगे बढ़ाया। प्रेक्षा ध्यान, जीवन विज्ञान आदि अनेक व्यक्तित्व विकास के सोपान प्रदान किए। साध्वी मलययशाजी, साध्वी आस्थाप्रभा जी ने आचार्य तुलसी के रोचक संस्मरणों की प्रस्तुति की। साध्वी दीक्षाप्रभा जी संचालन करते हुए गुरुदेव तुलसी के जीवन पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री द्वारा मंगल मंत्रोच्चार से हुई। सभा उपाध्यक्ष भंवरलाल मांडोत ने तुलसी अष्टकम का संगान किया। सभा अध्यक्ष मंगल कोचर, युवक परिषद् अध्यक्ष कमलेश चोपड़ा, अणुविभा के राष्ट्रीय संगठन मंत्री राजेश चावत, महिला मंडल अध्यक्षा मंजू गादिया ने अपने विचार व्यक्त किए। बरखा पुगलिया, रितु सामसुखा, सरिता छाजेड़, मिश्री लाल गांधी, चांदमल रांका, पिस्ता बाई ने भी अपनी प्रस्तुति दी। जैन युवा संगठन द्वारा भगवान महावीर के 2550 वें निर्वाणोत्सव पर आयोजित 'नवकार करे भव पार' जाप के लिए लक्की ड्रॉ द्वारा 5 श्रावकों को पुरस्कृत किया गया।

साउथ हावड़ा

मुनि जिनेशकुमार जी के सान्निध्य में राष्ट्रसंत आचार्यश्री तुलसी का 111वां जन्म दिवस अणुव्रत दिवस के रूप में प्रेक्षा विहार में साउथ हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा आयोजित किया गया। मुनि जिनेशकुमार जी ने कहा- बीसवीं सदी के आलोक पुंज व्यक्तित्व का नाम है - आचार्य श्री तुलसी। वे मानवता की धरती पर जीवन-मूल्यों की फसल उगाने वाले एक दिव्य दृष्टि सम्पन्न महामानव थे। वे नैतिक मूल्यों में विश्वास रखने वाले लाखों लोगों की आस्था के केन्द्र थे। वे गति, ऊर्जा, प्रकाश के पर्याय थे। उन्होंने अणुव्रत सूत्रपात कर मानव जाति को नई दिशा दी। वे साहित्यकार, प्रवचनकार, संगीतकार और कुशल प्रशासक थे। मुनिश्री ने आगे कहा उनके जीवन में अनेक उतार चढाव आए। फिर भी उन्होंने स्वस्थ व संतुलित जीवन जिया और तेरापंथ धर्मसंघ को समृद्ध बनाया। इस अवसर पर मुनि परमानंद जी ने कहा अणुव्रत आंदोलन के द्वारा आचार्यश्री तुलसी ने इंसान की इंसानियत को बढ़ावा दिया, लाखों लोगों का उद्धार किया। मुनि कुणाल कुमार जी ने गीत का संगान किया। अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के उपाध्यक्ष प्रतापचंद्र दुगड़ ने अपने विचार व्यक्त किए। साउथ हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफणा ने स्वागत भाषण दिया। संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। आभार ज्ञापन मंत्री बसंत पटावरी ने किया।

गुवाहाटी

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में आचार्य श्री तुलसी का 111वां जन्म दिवस 'अणुव्रत दिवस' के रूप में मनाया गया। जनसभा को संबोधित करते हुए मुनिश्री ने कहा- आचार्य श्री तुलसी ने धर्मसंघ का बहुत विकास किया। कितने-कितने अवदानों से मानव जाति का विकास किया। उन्होंने अध्यात्म एवं नैतिकता के जगत में अनूठे कार्य किए। शिक्षा और साधना पर जोर दिया। साधु-साध्वियों की प्रवचनशैली, संगीत कला, लेखन कला की ओर सलक्ष्य प्रयास करते गए। वे जाति, धर्म, संप्रदाय से ऊपर उठकर कार्य करते गए। श्रावक-श्राविकाओं को अणुव्रत आंदोलन के कार्यों में लगाकर प्रोत्साहन के द्वारा संघ के सैकड़ों श्रावक कार्यकर्ताओं को तैयार किया। प्रेरणा, प्रगति एवं पुरुषार्थ के द्वारा समाज एवं राष्ट्र के विकास के रास्ते खोल दिए। देश-विदेश तक अहिंसा, अनेकांत, अपरिग्रह, अणुव्रत-प्रेक्षाध्यान को जनव्यापक बनाया। सामाजिक, पारिवारिक एवं राष्ट्र की समस्या का समाधान अपने अवदान-साहित्य के माध्यम से दिया। वे कहते थे धर्म आचरण का तत्व है, पहनने-ओढ़ने का वस्त्र नहीं कि जब चाहा तब धारण किया एवं उतार दिया। उनका व्यक्तित्व विराट था। अपेक्षा है कि उनका जीवन दर्शन जनमानस तक पहुंचे, जिसके परिमाणस्वरूप संघ-समाज का सुधार हो सके। मुनि कुमुद कुमारजी ने कहा- आचार्य श्री तुलसी ने अपने जीवन काल में मानव जाति के उत्थान के अनेक कार्य किए। वे केवल उपदेश देते ही नहीं थे अपितु उसे आत्मसात भी करते थे। 'निज पर शासन फिर अनुशासन' का नारा देकर व्यक्ति को भीतर से जागृत किया। स्वयं जागरूकता से आत्मसाधना करते हुए समाज को भी जीवंत प्रेरणा दी। उन्होंने प्रशंसा नहीं, प्रस्तुति को महत्व दिया। गुणगान-प्रशंसा से नहीं, कार्यों से आचार्य श्री तुलसी को भावांजलि अर्पित करें। मुख्य अतिथि चंद्रशेखर चौबे ने कहा- मैं आश्चर्यचकित हूं इतने बड़े आचार्य, समाज सुधारक जिनका व्यक्तित्व, कर्तृत्व, अवदान, चिंतन को विद्यालय, विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम से क्यों नहीं जोड़ा गया। हमें उनके विचारों पर चलना होगा। कार्यक्रम का शुभारंभ अणुव्रत समिति की महिला सदस्यों द्वारा मंगलाचरण से हुआ। महिला मंडल से उपाध्यक्ष सुनीता गुजरानी, अणुव्रत समिति मंत्री संजय चौरड़िया, तेयुप अध्यक्ष सतीश कुमार भादानी, सभा अध्यक्ष बाबूलाल सुराणा, महासभा उपाध्यक्ष विजय कुमार चोपड़ा, सभा पदाधिकारी, दिलीप दुगड़, विजयराज डोसी ने विचारों की अभिव्यक्ति गीत एवं वक्तव्य के माध्यम से दी। आभार अणुव्रत समिति के कोषाध्यक्ष अजय भंसाली ने व्यक्त किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि कुमुद कुमार जी ने किया।

रायपुर

मुनि सुधाकर जी के सान्निध्य में आचार्य श्री तुलसी के 111 वें जन्मोत्सव पर विशेष आयोजन किया गया। मुनिश्री ने कहा कि गुरुदेव श्री तुलसी विरोध में भी विनोद को देखते थे। उनकी इसी प्रतिभा के कारण अन्य जैनेत्तर भी उनके प्रशंसक थे। वे नारियल की तरह कठोर तो फूल से भी कोमल हृदय वाले थे। उनकी पांच कौशल प्रतिभा - अध्यात्म, नेतृत्व, साहस, समयज्ञ और शिक्षा को अनेक उदाहरणों से समझाते हुए उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को संबोधित किया। मुनिश्री ने आगे कहा कि आचार्य तुलसी ने तेरापंथ धर्मसंघ को अनेक अवदान दिये, धर्मसंघ के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। वे निज पर शासन फिर अनुशासन के पक्षधर थे, जिसका उदाहरण उन्होंने आचार्य पद में रहते हुए आचार्य पद का विसर्जन कर मानव समाज को विसर्जन की भूमिका का प्रस्तुतीकरण दिया।

संक्षिप्त खबर

इंटर स्कूल ड्रॉइंग कॉम्पीटिशन का आयोजन

इरोड। मुनि रश्मि कुमार जी के सान्निध्य में इंटरस्कूल ड्रॉइंग कॉम्पीटिशन स्थानीय तेरापंथ भवन में अणुव्रत मंच के द्वारा आयोजित किया गया। मुनि रश्मिकुमार जी ने बच्चों को अणुव्रत के बारे में जानकारी प्रदान करवायी, अणुव्रत के नियमों पर प्रकाश डाला और नशा मुक्त रहने का संकल्प करवाया। मुनि प्रियांशु कुमारजी ने भी अपने विचार व्यक्त किये। अणुव्रत मंच के संयोजक सेल्वराजन, महासभा उपाध्यक्ष नरेन्द्र नखत और सभा अध्यक्ष जवेरीलाल भंसाली ने अपने विचार रखे। 6 विद्यालयों से 272 विद्यार्थियों ने भाग लिया। मंच संचालन ऋषभ पटावरी ने किया।

हर दिन, हर क्षण, हर समय अपने आप में मंगल होता है

माधावरम (चेन्नई)। साध्वी डॉ. गवेषणाश्रीजी ने नये वर्ष में उमड़े जन सैलाब को विविध मंत्रों के मंत्रोच्चारण से नव ऊर्जा का संचार करते हुए कहा- हर दिन, हर क्षण, हर समय अपने आप में मंगल होता है, किन्तु 365 दिनों में कुछ दिन विशेष होते हैं जो व्यक्ति के विकास, समृद्धि, रिद्धि में योगभूत बनते हैं, उसी में एक पर्व है- दीपावली। दीपावली का दूसरा दिन भारतीय संस्कृति में महत्वपूर्ण माना जाता है। आज के दिन हम विशेष मंत्रोच्चार के साथ अपने आपको भावित करें। जिससे हमारा पूरा वर्ष आरोग्यमय, सुखमय, आनंदमय और समृद्धमय बने। साध्वी मयंकप्रभाजी ने कहा कि जीवन के स्तर को ऊंचा उठाने के लिए अच्छी बातों को सेव करें एवं बुरी बातों को डिलीट करें और जो हमें अच्छी लगे उन्हें फॉरवर्ड करें। साध्वी दक्षप्रभाजी ने गीतिका प्रस्तुत की। साध्वी मेरुप्रभाजी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए अपने विचार रखे। वृहद् मंगलपाठ के अन्तर्गत साध्वीश्री ने अनेक मंत्रोच्चार एवं तीर्थंकरों की स्तुति करवायी। अभातेयुप अध्यक्ष रमेश डागा ने भी अपने विचार रखे। मंत्री पुखराज चोराडिया ने स्वागत और आभार ज्ञापन किया।

नववर्ष का वृहद मंगलपाठ

पालघर। तेरापंथी सभा पालघर द्वारा साध्वी डॉ. पीयूष प्रभाजी ठाणा 4 के सान्निध्य में दीपावली एवं नववर्ष के अवसर पर तेरापंथ भवन में वृहद मंगल पाठ का आयोजन किया गया। साध्वी डॉ. पीयूष प्रभा जी ने नववर्ष की शुभकामनाएं देते हुए प्रेरणा प्रदान की व भक्तामर स्त्रोत्र, पैंसठिया छंद व विविध मंत्रोच्चार के साथ सामूहिक ध्यान व जप प्रयोग करवाया गया। सभा अध्यक्ष चतुर तलेसरा, स्थानकवासी संघ अध्यक्ष हिम्मतमल परमार आदि ने नववर्ष की शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम में पालघर, बोईसर, सफाला, वाणगांव, मनोर आदि क्षेत्रों के श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रही। कार्यक्रम के प्रायोजक घोटावत परिवार का स्वागत किया गया। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री दिनेश राठोड़ ने किया।

संस्कारशाला का आयोजन

इचलकरंजी। अभातेमम के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल, इचलकरंजी द्वारा समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत संस्कारशाला का आयोजन साईं इंग्लिश स्कूल में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। समता चौपड़ा ने महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करवाया। निशा छाजेड ने बच्चों को बताया कि माता पिता का सम्मान करना चाहिए। बड़ों को प्रणाम करके ना सिर्फ़ हम उनका सम्मान करते हैं, साथ में उनके आशीर्वाद से पॉजिटिव एनर्जी भी मिलती है। रजनी पारख, नीतू छाजेड़, सावी छाजेड़, मानसी छाजेड़, काजल छाजेड और निशा छाजेड ने गीत प्रस्तुत किया। मंत्री मीना भंसाली ने स्कूल के प्रिंसिपल एवं स्टाफ़ का आभार ज्ञापित किया। लगभग 80 बच्चों की उपस्थिति रही।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

■ **पूर्वांचल कोलकाता।** बीकानेर निवासी पूर्वांचल कोलकाता प्रवासी, स्वः इंदरचंद जी सुराणा- आशा देवी सुराणा के पुत्र लोकेश सुराणा एवं पुत्रवधू श्वेता सुराणा के पुत्र का नामकरण जैन संस्कार विधि से संस्कारक पुष्पराज सुराणा एवं अनूप गंग ने सम्पादित करवाया।

■ **बेंगलुरु।** सुजानगढ़ निवासी बेंगलुरु प्रवासी प्रमिला – रणजीत सिंघी की पोत्री एवं निधि - अनुराग डोसी की पुत्री का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक जितेंद्र घोषल ने निर्दिष्ट मंत्रों का उच्चारण करते हुए संपादित करवाया। शिशु का नाम सिद्धि रखा गया।

नूतन गृह प्रवेश

■ **भीलवाड़ा।** प्रभाकर सिंह प्रवीण नैनावटी के नूतन गृहप्रवेश का मंगल शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा गुरु पुष्य नक्षत्र में हुआ। संस्कारक अशोक सिंघवी एवं नवीन वागरेचा ने विधि विधान पूर्वक कार्यक्रम सम्पन्न करवाया।

■ **पर्वत पाटीया।** गंगाशहर निवासी पर्वत पाटीया (सूरत) प्रवासी तोलाराम लक्ष्मी देवी छाजेड के सुपुत्र जयकरण व पुत्रवधु सरिता छाजेड का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से हुआ। संस्कारक पवन कुमार बुच्चा, रवि मालू व विनीत श्यामसुखा ने सम्पूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से गृह प्रवेश संस्कार सानंद संम्पन करवाया।

■ **गंगाशहर।** मनीष कुमार - संगीता सुराना पुत्र एवं पुत्रवधु शिखरचंद - स्व. तारा देवी सुराना निवासी गंगाशहर के नूतन गृहप्रवेश का मंगल शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक धर्मेन्द्र डाकलिया और देवेन्द्र डागा ने विधि विधान पूर्वक सम्पन्न करवाया।

■ नरेश-सोनल छल्लाणी के नूतन गृह का मंगल प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक रतनलाल छल्लाणी, विनीत बोथरा और विपिन बोथरा ने विधि विधान पूर्वक सम्पन्न करवाया।

■ मंगलचन्द नीलम देवी संचेती के नूतन गृह का मंगल प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक भरत गोलछा, विनीत बोथरा ने विधि विधान पूर्वक सम्पन्न करवाया।

■ पारस देवी - बच्छराज बोथरा के पुत्र व पुत्रवधु सुरेन्द्र कुमार - सोनिया बोथरा के नूतन गृह का मंगल प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक धर्मेन्द्र डाकलिया और देवेन्द्र डागा ने विधि विधान पूर्वक सम्पन्न करवाया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

■ **गंगाशहर।** कुलदीप छाजेड़ सुपुत्र बिन्दु-पवन छाजेड़ के नूतन प्रतिष्ठान BIPA ENTERPRISES का मंगल शुभारंभ जैन संस्कार विधि से आयोजित हुआ। संस्कारक रतन लाल छलाणी, पीयूष लूणिया, पवन छाजेड़, भरत गोलछा और देवेन्द्र डागा ने विधि विधान पूर्वक प्रतिष्ठान का शुभारंभ करवाया।

■ **कोलकाता मेन।** चुरू निवासी कोलकाता प्रवासी विवेक बांठिया के नूतन प्रतिष्ठान विवेक बांठिया एंड कंपनी का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक राकेश राखेचा ने मंगल मंत्रोच्चार के साथ सानन्द संपादित करवाया।

■ **गोरेगांव, मुंबई।** विमल कुंडलिया के नूतन ऑफिस का उद्घाटन जैन संस्कार विधि से संस्कारक सुरेश ओस्तवाल व सहयोगी अशोक चौधरी ने निर्दिष्ट विधि विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से संपादित करवाया ।

स्वस्थ मन से होता है स्वस्थ तन का निर्माण

उदयपुर।

स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का निवास होता है। स्वस्थ मन से स्वस्थ तन का निर्माण होता है। शरीर की बीमारी मन को और मन की बीमारी शरीर को प्रभावित करती है। स्वस्थ परिवार का आधार है- महिला। यदि महिला स्वस्थ रहती है तो पूरा परिवार स्वस्थ रह सकता है। महिलाएं जैसे शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं, वैसे ही स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी आगे बढ़ें। सम्पूर्ण रूप से स्वस्थ रहने के लिए योग, ध्यान, प्राणायाम, एक्युप्रेशर, मंत्र योग, अनुप्रेक्षा के साथ आहार विवेक, वाणी संयम तथा रंग चिकित्सा आदि के प्रयोग नियमित एवं विधिपूर्वक करना चाहिए। आचार्य महाप्रज्ञ जी ने स्वास्थ्य, संतुलन एवं शान्ति के लिए प्रेक्षा ध्यान योग साधना पद्धति का प्रवर्तन किया। उक्त विचार आचार्य महाश्रमण जी के शिष्य एवं 'शासनश्री' मुनि सुरेश कुमार जी के सहवर्ती मुनि सिद्धप्रज्ञजी ने विज्ञान समिति अशोक नगर उदयपुर में 'स्वस्थ महिला स्वस्थ समाज' विषय पर संबोधित करते हुए व्यक्त किये। मुनिश्री ने शारीरिक स्वास्थ्य के लिये योग, मुद्रा एवं आहार विज्ञान का प्रशिक्षण दिया। उन्होंने मानसिक संतुलन के लिए मंत्र योग एवं प्राणायाम के प्रयोग कराये। भावनात्मक नियंत्रण के लिए रंगों का ध्यान एवं संकल्प शक्ति के उपाय बताए। प्रारम्भ में डॉ. पुष्पा कोठारी ने मुनिश्री का परिचय देते हुए कहा कि मुनिश्री ने समण दीक्षा के दौरान 22 देशों की यात्रा की तथा पिछले 4 जन्मों का अनुभव किया है। विज्ञान समिति के मुख्य संचालक डॉ. कुन्दन कोठारी ने कहा- मुनि श्री ने जिस तरीके से आज हमे प्रशिक्षण दिया, यह आत्म विकास में बहुत सहायक है। ये प्रयोग बहुत वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक है। कंचन देवी सोनी ने आभार व्यक्त किया। कार्यशाला में 70 से अधिक प्रबुद्ध महिलाओं ने रुचि से भाग लेकर जिज्ञासाओं का समाधान किया। कार्यशाला में प्रकाश धाकड़ का सहयोग रहा।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
02 दिसम्बर- 08 दिसम्बर, 2024

संबोधि

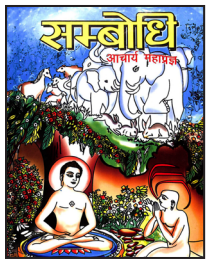

गृहिधर्मचर्या

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

आत्म-जगत् में जागृत रहने से हमारा व्यवहार बंद नहीं होता, किन्तु व्यवहार में जो आसक्ति होती है वह खत्म हो जाती है।

साधक के लिए व्यवहार गौण है और आत्मा प्रधान है। वह आत्म-हित को खोकर कहीं प्रवृत्त नहीं हो सकता। भगवती आराधना में कहा है-'आभ्यन्तर शुद्धि के साथ बाह्य-व्यवहार-शुद्धि तो अवश्यंभावी है। बहिरंग दोष इस बात के प्रमाण है कि व्यक्ति भीतर में शुद्ध नहीं है।' व्यवहार-शुद्धि धोखा भी हो सकती है। गृहस्थ श्रावक जो अपनी अंतश्चेतना में उतर गया, वह बाहर में लिप्त नहीं होता।

'**अभोगी नोवलिप्पर**' आत्मानुरक्त व्यक्ति उपलिप्त नहीं होता। जीवनचर्या उसकी भी होती है, वह व्यवहार में कार्य भी करता है, किन्तु अपने केन्द्र को छोड़ता नहीं।

१५. अज्ञानकष्टं कुर्वाणा, हिंसया मिश्रितं बहु।
मुमुक्षां दधतोऽप्येके, बध्यन्तेऽज्ञानिनो जनाः॥

अविवेकपूर्ण ढंग से बहुत सारे हिंसा मिश्रित कष्टों को झेलने वाले अज्ञानी लोग मुक्त होने की इच्छा रखते हुए भी कर्मों से आबद्ध होते हैं।

१६. कर्मकाण्डरताः केचिद्, हिंसां कुर्वन्ति मानवाः।
स्वर्गाय यतमानास्ते, नरकं यान्ति दुस्तरम्।।

क्रियाकाण्ड में आसक्त होकर जो लोग हिंसा करते हैं, वे स्वर्ग प्राप्ति का प्रयत्न करते हुए भी दुस्तर नरक को प्राप्त होते हैं।

महावीर कष्ट-सहिष्णु थे और कष्टों के आमंत्रक भी थे। समागत या आमंत्रित कष्टों में उनकी धृति अविच्युत थी। उनकी दृष्टि आत्मा पर थी। वे आत्म-निखार में सतत जागरूक थे। इसलिए उन्होंने आत्म-विस्मृत होकर कष्ट सहने का समर्थन नहीं किया? और न हिंसापूर्ण वृत्तियों का। रत्नसार में आचार्य कहते हैं- 'क्रोध को दंडित नहीं कर शरीर को दंडित करना बुद्धिमानी नहीं है। उससे शुद्धि नहीं होती। सांप को न मार कर सर्प के बिल पर मार करने से सर्प नहीं मारा जाता।' केवल देह-दंड से नहीं, आंतरिक कषाय शत्रुओं को परास्त करने से ही आत्म-बोध संभव है। जिस प्रक्रिया से दूसरों को उत्पीड़न न हो और विजातीय तत्त्व का रेचन हो, वह तप है। आत्म-बोध यदि तप से नहीं होता है तो वह तप अज्ञान तप की कोटि में चला जाता है। महावीर अज्ञान तप के प्रसंशक नहीं; अपितु उसके प्रबल विरोधक थे। वे शुद्ध क्रिया के समर्थक थे, चाहे कोई भी व्यक्ति, कहीं पर करता हो, उनकी दृष्टि में वह समादरणीय था। अनेक अन्य मतावलंबी व्यक्तियों की भी महावीर ने प्रशंसा की थी। किन्तु हिंसापूर्ण क्रिया और आत्मज्ञान को आवृत करने वाले कार्यों से वांछित वस्तु की प्राप्ति को वे असंभव मानते थे।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्य भिक्षु युग

साध्वीश्री वन्नांजी (बड़ी पादू) दीक्षा क्रमांक 41

साध्वीश्री बड़ी विनयवती थी। निर्मलभावों से संयम का पालन करती। आपने 15 वर्ष के साधना काल में अनेक तप किये पर उसकी तालिका उपलब्ध नहीं है। तप से आपने शरीर का सार निकाला और उसे सुखा दिया फिर अनशन द्वारा अपना आत्म कल्याण किया।

– साभार: शासन समुद्र –

श्रमण महावीर

कहीं वंदना और कहीं बंदी

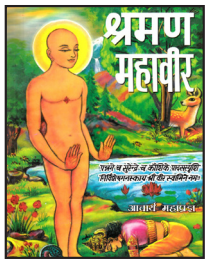

संगम आगे हो गया गांव के लोग उसके पीछे-पीछे चलने लगे। वे सब भगवान् के पास पहुंचे। संगम ने कहा, 'ये हैं मेरे गुरु।' लोगों ने भगवान् से पूछा, 'क्या तुम चोर हो?' भगवान् मौन रहे। लोगों ने फिर पूछा, 'क्या तुमने इसे चोरी करने के लिए भेजा था?' भगवान् अब भी मौन थे। लोगों ने सोचा, कोई उत्तर नहीं मिल रहा है, अवश्य ही इसमें कोई रहस्य छिपा हुआ है। वे भगवान् को बांधकर गांव में ले जाने लगे।

महाभूतिल उस युग का प्रसिद्ध ऐन्द्रजालिक था। वह उस रास्ते से जा रहा था। उसने देखा, 'बन्धन मुक्ति को अभिभूत करने का प्रयत्न कर रहा है।' उसने दूर से ही ग्रामवासियों को ललकारा, 'मूर्खों! यह क्या कर रहे हो?' उन्होंने देखा यह महाभूतिल बोल रहा है। उनके पैर ठिठक गये। वे कुछ सिर झुकाकर बोले, 'महाराज ! यह चोर है। इसे पकड़कर गांव में ले जा रहे हैं।' इतने में महाभूतिल नजदीक आ गया। वह भगवान् के पैरों में लुढ़क गया।

ग्रामवासी आश्चर्य में डूब गये। यह क्या हो रहा है? हम भूल रहे हैं या महाभूतिल? क्या यह चोर नहीं? वे परस्पर फुसफुसाने लगे। महाभूतिल ने दृढ़ स्वर में कहा, 'यह चोर नहीं है? महाराज सिद्धार्थ का पुत्र राजकुमार महावीर है। जिस व्यक्ति ने राज्य-सम्पदा को त्यागा है, वह तुम्हारे घरों में चोरी करेगा? मुझे लगता है कि तुम लोग चिंतन के क्षेत्र में बिलकुल दरिद्र हो।'

'महाराज! आप क्षमा करें। हमारी भूल हुई है, उसका कारण हमारा अज्ञान है। हमने जान-बूझकर ऐसा नहीं किया' ग्रामवासी एक साथ चिल्लाए ।

भगवान् पहले भी शांत थे, बीच में भी शांत थे और अब भी शांत हैं। शांति ही उनके जीवन की सफलता है।

९. भगवान् तोसली से प्रस्थान कर मोसली गांव पहुंचे। वहां संगम ने फिर उसी घटना की पुनरावृत्ति की। आरक्षक भगवान् को पकड़कर राजकुल में ले गए। उस गांव के शास्ता का नाम था सुमागध। वह सिद्धार्थ का मित्र था। उसने भगवान् को पहचाना और मुक्त कर दिया। उसने अपने आरक्षकों की भूल के लिए क्षमा मांगी और हार्दिक अनुताप प्रकट किया।

१०. भगवान् फिर तोसली गांव में आए। संगम ने कुछ औजार चुराए और भगवान् के पास लाकर रख दिए। आरक्षक भगवान् को तोसली क्षत्रिय के पास ले गए। क्षत्रिय ने कुछ प्रश्न पूछे। भगवान् ने कोई उत्तर नहीं दिया। क्षत्रिय के मन में संदेह हो गया। उसने फांसी के दंड की घोषणा कर दी।

जल्लाद ने भगवान् के गले में फांसी का फंदा लटकाया और वह टूट गया। दूसरी बार फिर लटकाया और फिर टूट गया। सात बार ऐसा ही हुआ। आरक्षक हैरान थे। वे क्षत्रिय के पास आए और बीती बात कह सुनाई। क्षत्रिय ने कहा, 'यह चोर नहीं है। कोई पहुंचा हुआ साधक है।' वह दौड़ा-दौड़ा आया। भगवान् के चरणों में नमस्कार कर उसने अपने अपराध के लिए क्षमा-याचना की।

भगवान् अक्षमा और क्षमा-दोनों की मर्यादा से मुक्त हो चुके थे। उनके सामने न कोई अक्षम्य था और न कोई क्षम्य। वे सहज शांति की सरिता में निष्णात होकर विहार कर रहे थे।

नारी का बन्ध-विमोचन

नवोदित सूर्य की रश्मियां व्योमतल में तैरती हुई धरती पर आ रही हैं। तिमिर का सघन आवरण खण्ड-खण्ड होकर शीर्ण हो रहा है। प्रकाश के अंचल में हर पदार्थ अपने आपको प्रकट करने के लिए उत्सुक-सा दिखाई दे रहा है। नींद की मादकता नष्ट हो रही है। जागरण का कार्य तेजी के साथ बढ़ रहा है।

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

अदत्ताग्रहणम् अस्तेयम्

'ठाणं' के मूल पाठ व टिप्पण में इस चतुष्टयी का आधार प्राप्त है। मूल पाठ की भाषा इस प्रकार है-

चउव्विहे कम्मे पण्णत्ते, तंजहा-

सुभे णाममेगे सुभे,
सुभे णाममेगे असुभे,
असुभे णाममेगे सुभे,
असुभे णाममेगे असुभे।

इसी प्रकार विपाक की दृष्टि से भी कर्म चार प्रकार के होते हैं—

१. **पुण्यविपाकी पुण्य कर्म**— बन्धनकाल में भी पुण्य और उदयकाल में भी पुण्य कर्म।

२. **पुण्यविपाकी पाप कर्म**— बन्धनकाल में पाप और उदयकाल में पुण्य कर्म।

३. **पापविपाकी पुण्य कर्म**— बन्धनकाल में पुण्य और उदयकाल में पाप कर्म।

४. **पापविपाकी पाप कर्म**— बन्धनकाल में भी पाप और उदयकाल में भी पाप कर्म।

मूल पाठ की भाषा इस प्रकार है—

चउब्विहे कम्मे पण्णत्ते तंजहा—

सुभे णाममेगे सुभविवागे,
सुभे णाममेगे असुभविवागे,
अझुभे णाममेगे सुभविवागे,
असुभे णाममेगे असुभविवागे।

इस प्रकार कर्म की स्थिति को जानकर साधक पाप कर्मों को छोड़ अनासक्त भाव से कल्याणकारी कर्म में प्रवृत्त होता है तो वह सर्वथा बन्धन मुक्त बन सकता है।

तवेसु वा उत्तम बंभचेरं

जीवन का लक्ष्य आत्महित, सुखानुभूति व शांतिप्राप्ति होता है, होना चाहिए। स्थायी और चैतसिक सुख शान्ति संयम व त्याग-प्रत्याख्यान से प्रसूत होती है। आगम-साहित्य में प्रत्याख्यान के दो प्रकार बतलाए गए हैं—

१. मूलगुण प्रत्याख्यान

२. उत्तरगुण प्रत्याख्यान।

आध्यात्मिक साधना के लिए जो गुण अनिवार्य होते हैं वे मूलगुण कहलाते हैं। साधना के विकास के लिए किए जाने वाले निर्धारित प्रयोग उत्तरगुण कहलाते हैं। मूलगुण प्रत्याख्यान के दो प्रकार हैं – सर्वमूलगुण प्रत्याख्यान और देशमूलगुण प्रत्याख्यान। इनमें प्रथम सर्वविरत (मुनि) के लिए और दूसरा देशविरत (श्रावक) के लिए आचरणीय होता है।

सर्वमूलगुण प्रत्याख्यान के पांच प्रकार हैं- १. सर्वप्राणातिपात विरमण २. सर्व मृषावाद विरमण, ३. सर्व अदत्तादान विरमण ४. सर्व मैथुन विरमण ५. सर्व परिग्रह विरमण।

देश मूलगुण प्रत्याख्यान के भी पांच प्रकार हैं—

१. स्थूल प्राणातिपात विरमण

२. स्थूल मृषावाद विरमण

३. स्थूल अदत्तादान विरमण

४. स्थूल मैथुन विरमण

५. स्थूल परिग्रह विरमण।

उत्तरगुण प्रत्याख्यान के दो प्रकार हैं—

१. सर्व उत्तरगुण प्रत्याख्यान।

२. देश उत्तरगुण प्रत्याख्यान।

(क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु ई-मेल करें
abtyptt@gmail.com

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

दिसम्बर 2024 सप्ताह के विशेष दिन

10 दिसम्बर
भगवान अरनाथ जन्म एवं निर्वाण कल्याणक

11 दिसम्बर
भगवान अरनाथ दीक्षा, भ. मल्लिनाथ जन्म एवं केवलज्ञान, भ. नमिनाथ केवलज्ञान कल्याणक

14 दिसम्बर
भगवान संभवनाथ दीक्षा कल्याणक

15 दिसम्बर
भगवान संभवनाथ दीक्षा कल्याणक एवं पक्खी

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्य श्री जीतमलजी युग

मुनिश्री भीमजी (मांडा) दीक्षा क्रमांक 196

मुनिश्री उच्चकोटि के तपस्वी हुए। आपने तपोबल से जीवन को चमकाया और तेरापंथ को तेजस्वी बनाया। आपके द्वारा की गई तप की तालिका इस प्रकार है– 43 महीने एकांतर किये। 4 वर्ष बेले-बेले तप किया। उनके बीच 80 तेले किये। चोले आदि थोकड़े इस प्रकार हैं– 4/32, 5/22, 6/6, 7/7, 8/1 यह सब तप चौविहार किये। उक्त तप के बाद आपने आजीवन चौविहार तेले-तेले का तप किया बीच-बीच में चोले आदि भी किये। 13 वर्ष तक तेले-तेले तप चला। तपस्या के क्षेत्र में आपने एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। मुनिश्री ने 9 वर्ष रेत या तप्त शिला पर सोकर प्रायः आतापना ली। सर्दी में 9 वर्ष प्रायः शीत सहन किया। 12 वर्ष विगय और व्यंजन (साग) नहीं खाया। प्रायः दो ही द्रव्य खाते।

– साभार: शासन समुद्र –

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
02 दिसम्बर- 08 दिसम्बर, 2024

गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी के 111वें जन्मदिवस पर विविध कार्यक्रम

चेंबूर

आचार्य श्री तुलसी की अभ्यर्थना में साध्वी राकेश कुमारी जी ने कहा- आचार्य तुलसी भारतीय ऋषि परंपरा के दिव्यमान सूर्य थे। ऐसे युगपुरुष ने प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, अणुव्रत, नया मोड़, साहित्य, समण श्रेणी आगम संपादन आदि कई अवदान दिए। आप संपूर्ण मानव जाति के धार्मिक नेता थे। आपने धर्म को ग्रंथों और पंथों से बाहर निकाल कर जीवन में उतारने का प्रयास किया। साध्वी मलयविभा जी ने कहा कि आचार्य तुलसी का बाह्य और आंतरिक दोनों ही व्यक्तित्व विशाल थे। गुरुदेव की आंखों में ऐसा तेज था कि आने वाले सभी प्रभावित हो जाते थे। महिला मंडल ने मंगलाचरण, बंशीलाल पटावरी ने मुक्तक के माध्यम से अपनी प्रस्तुत दी। इस अवसर पर तप अभिनंदन समारोह का आयोजन भी किया गया, जिसमें चेंबूर व आसपास के क्षेत्र से 80 से भी ज्यादा तपस्वियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा अध्यक्ष रमेश धोका ने किया।

मंड्या

साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में अणुव्रत दिवस पर विशेष कार्यक्रम ब्राह्मण समुदाय भवन मंड्या में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि राजयोगिनी ब्रह्मकुमारी शारदा दीदी का आगमन हुआ। साध्वी संयमलता जी ने कहा - गुरुदेव तुलसी 20वीं सदी के महासूर्य थे। उन्होंने अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से मानव धर्म की कल्पना की। नैतिकता, ईमानदारी, मानवीय करुणा जैसे जीवन मूल्यों को अपनाकर हम अपने देश के उन्नत चरित्र की कल्पना को साकार रूप दे सकते हैं। हम उस महामानव संत तुलसी की 111 वीं जन्म जयंति पर स्वयं के जीवन चरित्र को मूल्यों से संवार कर, उन्नति की दिशा प्रदान करें। इस अवसर पर ब्रह्मकुमारी शारदा दीदी ने कहा- हमारा जीवन शुभ भाव व शुभ चिंतन से ओत-प्रोत रहे। किसी का हम अहित नहीं करे यही अणुव्रत का संदेश है। महिला मंडल ने मंगलाचरण से कार्यक्रम की मंगल शुरुआत की। स्वागत व आभार ज्ञापन सभा अध्यक्ष सुरेश भंसाली व मंत्री विनोद भंसाली ने किया। साध्वी मार्दवश्रीजी ने कहा कि आज की युगीन समस्याओं का समाधान अणुव्रत अर्थात संयम ही है। कार्यक्रम में मूर्तिपूजक संघ के अध्यक्ष सज्जनराज भंसाली, स्थानकवासी सम्प्रदाय के अध्यक्ष अमरचंद डागा, तेरापंथ सभा, महिला मंडल, युवक परिषद्, कन्या मंडल, ज्ञानशाला के बच्चों सहित श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थित रही।

पालघर

साध्वी डॉ. पीयूषप्रभा जी के सान्निध्य में राष्ट्रसंत आचार्य श्री तुलसी का जन्म दिवस 'अणुव्रत दिवस' के रूप में जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा पालघर द्वारा आयोजित किया गया। इस अवसर पर साध्वी श्री ने कहा- बीसवीं सदी के अलोकपुंज व्यक्तित्व का नाम है आचार्य श्री तुलसी। वे मानवता की धरती पर जीवन मूल्यों में विश्वास रखने वाले जन-जन की आस्था के केंद्र थे तो आधुनिका से भी परहेज नहीं करते थे। वे अलबेले योगी, संत, फकीर, प्रशासक, साहित्यकार, संगीतकार व प्रवचनकार थे। साध्वी भावनाश्रीजी ने कहा कि गुरुदेव श्री तुलसी ने मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना एवं चारित्रिक मूल्यों के उन्नयन के लिए अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया। अणुव्रत केवल आचार संहिता ही नहीं अपितु पूरा जीवन दर्शन है, धर्म और व्यवहार का सेतु है। साध्वी सुधाकुमारी जी ने गीत का संगान किया। साध्वी दीप्तियशा जी ने कहा कि आचार्य तुलसी दिव्य दृष्टि से सम्पन्न थे। वे चुंबकीय व्यक्तित्व के धनी थे। मंगलाचरण शांतिलाल सिंघवी ने सुमधुर गीतिका द्वारा किया। इस अवसर पर सभा के मंत्री दिनेश राठौड़, सभा परामर्शक खेलीलाल बदामिया, ज्ञानशाला प्रभारी राकेश श्रीश्रीमाल आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन साध्वी दीप्तियशा जी ने किया।

माधावरम् (चैन्नई)

आचार्य श्री तुलसी के 111वां जन्म दिवस के अवसर पर साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी ने कहा- आचार्य श्री तुलसी एक ब्रह्मर्षि, देवर्षि और राजर्षि थे। आचार्य श्री तुलसी उस व्यक्तित्व का नाम है, जिनकी ख्याति राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय दोनों क्षेत्रों में व्याप्त हो चुकी है। आचार्य श्री तुलसी उस विकास पुरुष का नाम है जिनके कण-कण में जवानी का जोश उभरता है। 18 घंटे श्रम करने के बाद भी वही ताजगी, वही स्फूर्ति, वही क्रियाशीलता। साध्वी दक्षप्रभाजी ने अपने सुमधुर स्वरों से सबको भावविभोर कर दिया। साध्वी मेरुप्रभाजी ने भी गीत का संगान किया। कार्यक्रम की शुरुआत ज्ञानशाला के ज्ञानर्थियों द्वारा तुलसी अष्टकम् से हुई। स्वागत भाषण माधावरम् ट्रस्ट के अध्यक्ष घीसुलाल बोहरा ने दिया। मुख्य अतिथि एवं जैन महा संघ के अध्यक्ष प्यारेलाल पितलिया ने भी अपने विचार व्यक्त किये। माधावरम कॉर्पोरेशन के चेयरमेन नंदकिशोर ने अपने विचार रखते हुए कहा कि सरकार द्वारा इस उद्यान एवं गली का नाम आपके गुरु के नाम से जोड़ा गया है। माधावरम् की कन्याओं ने आचार्य श्री तुलसी की साहित्य यात्रा की एक सुंदर प्रस्तुति दी। माधावरम की बहनों ने सुमधुर स्वरों के साथ प्रस्तुति दी। बालोतरा से समागत गायक प्रकाश श्रीश्रीमाल ने राजस्थानी गीत प्रस्तुत किया। मुख्य वक्ता राकेश खटेड़ ने आचार्य श्री तुलसी के अवदानों पर अपना वक्तव्य दिया। कार्यक्रम के अंतर्गत जैन विश्व भारती में चयनित सदस्यों एवं अमृतवाणी के पदाधिकारियों का सम्मान माधावरम ट्रस्ट द्वारा किया गया। साध्वीश्री ने श्रावक माणकचंद रांका को 11 प्रतिमा में से दूसरी प्रतिमा का प्रत्याख्यान करवाया। इस सन्दर्भ में सुरेश रांका ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मयंकप्रभाजी ने एवं धन्यवाद ज्ञापन ट्रस्ट के मंत्री पुखराज चोरड़िया ने दिया। तत्पश्चात माधावरम ट्रस्ट द्वारा दिवाली मिलन समारोह में कौन बनेगा ज्ञानवान प्रतियोगिता का आयोजन राजेश खटेड द्वारा आयोजित किया गया जिसमें कमला बाई आच्छा, लाड़बाई चोरडिया एवं सरोज बोहरा, कुलदीप रांका ज्ञानवान बने।

पीलीबंगा

गणाधिपति गुरुदेव तुलसी के 111वें जन्म दिवस के उपलक्ष में साध्वी सुदर्शनाश्री जी के सान्निध्य में कार्यक्रम का आयोजन हुआ। नमस्कार महामंत्र का सामूहिक उच्चारण के पश्चात अहमदाबाद से समागत तरुण कुंडलिया द्वारा मंगलाचरण किया गया। साध्वी सुदर्शनाश्रीजी ने अपने उद्बोधन में कहा- गुरुदेव तुलसी और उनके अनगिनत आयामों को शब्दों में बांधना नामुकिन है। गुरुदेव तुलसी युगदृष्टा आचार्य थे, समय की मांग के हिसाब से उन्होंने अनेक आध्यात्मिक प्रयोग किए और संकल्प से उनमें सफलता भी मिली। साध्वी प्रणतिप्रभा जी ने भी आचार्य तुलसी की अभ्यर्थना में अपनी भावांजलि प्रस्तुत की। तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने गीतिका के माध्यम से गुरुदेव के अवदानों को प्रस्तुत किया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष मालचंद पुगलिया, महिला मंडल से पुष्पा नाहटा, सुशीला नाहटा, युवक परिषद से सतीश पुगलिया, प्रकाश चिंडालिया, मैत्री भंसाली, अनन्या पुगलिया और खुश भंसाली ने भाषण, कविता तथा गीतिका के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों द्वारा रोचक प्रस्तुति दी गई। इसमें रूपेश जैन, अंकिता सुराणा और निशा छाजेड़ का सहयोग रहा। अच्छी संख्या में साधार्मिक भाई-बहनों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन साध्वी प्रगतिप्रभा जी ने किया। रात्रिकालीन सत्र में आचार्य तुलसी के जीवन से संबंधित खुला प्रश्न मंच का आयोजन भी किया गया।

गांधीनगर

साध्वी उदितयशा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, गांधीनगर में आचार्य श्री तुलसी का 111वां जन्मदिवस 'अणुव्रत दिवस' के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। प्रज्ञा संगीत सुधा के सदस्यों ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। इस अवसर पर साध्वी उदितयशा जी ने कहा कि दो प्रकार के व्यक्ति होते हैं—अंतः दृष्टि वाले और बाह्य दृष्टि वाले। अंतः दृष्टि से आंतरिक अंधकार मिटता है, जबकि बाह्य दृष्टि से चीजें जैसी दिखाई देती हैं, वैसी ही समझ में आती हैं। गुरुदेव तुलसी ने रूढ़िवाद, अनैतिकता, और अप्रमाणिकता पर गहरा प्रहार किया। उन्होंने अपने कर्तव्यों को कभी नहीं छोड़ा और समाज को उजाले से भर दिया। उन्होंने बंद आंखों से ऐसे सपने देखे, जो हम खुली आंखों से भी नहीं देख सकते, और उन्होंने उन सभी सपनों को साकार किया। साध्वी भव्ययशा जी ने कहा कि यदि गुरुदेव तुलसी का कोई विरोध करता, तो वे कहते, 'जो हमारा करे विरोध, हम समझे उसे विनोद।' साध्वी शिक्षाप्रभा जी ने गीत के माध्यम से अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। साध्वी संगीतप्रभा जी ने संस्मरण और गीत के द्वारा अपने परम उपकारी के प्रति भाव प्रकट करते हुए कार्यक्रम का कुशल संचालन किया। इस अवसर पर अणुव्रत समिति के अध्यक्ष देवराज रायसोनी, सुरेंद्र नाहटा, ललित सेठिया, आदित्य सेठिया, और हर्षिल बरड़िया ने भी गीतों के माध्यम से गुरुदेव तुलसी के प्रति अपने श्रद्धासिक्त भाव व्यक्त किए।

भिवानी

मुनि देवेंद्रकुमार जी एवं तपोमूर्ति मनि पृथ्वीराज जी आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में तेरापंथ भवन भिवानी में आचार्य श्री तुलसी के जन्म दिवस का कार्यक्रम हर्ष उल्लास के साथ मनाया गया। मुनि देवेंद्र कुमार जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि गुरुदेव तुलसी ने अपना पूरा जीवन मानवता के कल्याण के लिए सौंप दिया। उनको भारत ज्योति की उपमा से भी उपमित किया गया। उनका जीवन अनूठा और अनुपमेय था। पूरे विश्व के कल्याण के लिए उन्होंने सूदूर प्रांतो की यात्रा की। गांव व शहरों में घूम-घूम कर नैतिकता का शंखनाद किया। तपोमूर्ति मुनि पृथ्वीराज जी ने अपने वक्तव्य में बताया कि आज के दिन दो-दो चांद का उदय हुआ। गुरुदेव श्री तुलसी ने साधु-साध्वियों के विकास के साथ-साथ श्रावक समाज का भी विकास किया। अणुव्रत का सूत्रपात किया। मुनिश्री ने 'बधांवा-बधांवा रे वदना लाल ने' गीत का सगांन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ भाइयों के मंगलाचरण द्वारा हुआ। गुरुदेव तुलसी के जन्म दिवस के उपलक्ष में सभा अध्यक्ष सन्मति कुमार जैन, सभा संरक्षक सुरेंद्र जैन एडवोकेट, माणकचंद नाहटा, वनिता जैन आदि ने अपनी भावनाएं प्रस्तुत की। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष रमेश बंसल ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया।

श्रीगंगानगर

गणाधिपति पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री तुलसी का 111 वां जन्मोत्सव अणुव्रत दिवस के रूप में साध्वी प्रज्ञावती जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण किया गया। त्रिसूत्रीय कार्यक्रम के अंतर्गत प्रातः कालीन प्रभात फेरी, मुख्य प्रवचन कार्यक्रम व रात्रि कालीन 'एक शाम तुलसी के नाम' भक्ति संध्या का आयोजन किया गया। साध्वी प्रज्ञावती जी ने कहा कि गुरुदेव श्री तुलसी और अणुव्रत एक दूसरे के पर्यायवाची हैं। गुरुदेव का जीवन हमें यह प्रेरणा देता है कि हम जो भी कार्य हाथ में लें उसे पूर्ण करने तक चरणों को गतिशील रखें। गुरुदेव जो कार्यक्रम को हाथ में ले लेते, उसे पूर्ण करके ही रहते थे। इस अवसर पर साध्वी प्रशांतयशाजी, साध्वी मंयकयशाजी ने अपनी भावांजलि अर्पित की। साध्वी कीर्तिप्रभा जी ने गीतिका का संगान किया। जय भिक्षु प्रतिष्ठान के अध्यक्ष सुरेंद्र जैन, मंत्री मुकेश जैन, उपमंत्री संदीप आंचलिया व लक्ष्मीचंद जैन दिल्ली ने अपने विचार प्रस्तुत किए। साध्वीश्री की प्रेरणा से उपस्थित सदस्यों ने अणुव्रती बनने का संकल्प स्वीकार किया। संचालन रोहित ने जैन किया।

75वां अणुव्रत अधिवेशन सूरत में आयोजित अणुव्रत अनुशास्ता का मिला आशीर्वाद

सूरत।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में अणुव्रत आंदोलन का 75वां राष्ट्रीय अधिवेशन 8 से 10 नवम्बर 2024 को सूरत में आयोजित हुआ। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में आयोजित इस अधिवेशन में अणुविभा की केंद्रीय टीम के कार्यकर्ताओं के साथ-साथ भारत व नेपाल की 66 अणुव्रत समितियों तथा 5 अणुव्रत मंचों से कुल 313 अणुव्रत कार्यकर्ताओं ने सहभागिता दर्ज की।

अधिवेशन के उद्घाटन सत्र में आचार्यप्रवर ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए कहा - अणुव्रत आंदोलन आदमी को हिंसा से अहिंसा को ओर, असत् से सत् की ओर आगे बढ़ाने का एक प्रयास है। अणुव्रत के कितने अधिवेशन हो चुके हैं, अच्छी बात है कि 75 वर्षों के बाद भी यह आंदोलन जीवित है। अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मननकुमार ने कहा कि अणुव्रत लोगों को स्वच्छंद से स्वतंत्र बनाने का, चारित्रिक व आध्यात्मिक उत्थान का दर्शन है। अध्यक्षीय वक्तव्य में अविनाश नाहर ने दो वर्षीय कार्यकाल में सम्पादित कार्यक्रमों का उल्लेख किया।

नाहर ने कहा - अणुव्रत का भूतकाल भी सुंदर था, वर्तमान भी सुंदर है और भविष्य भी सुंदर रहेगा। अणुविभा महामंत्री भीखम सुराणा ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया एवं श्रेष्ठ कार्य करने वाली अणुव्रत समितियों व अणुव्रत मंचों के नामों की घोषणा की। अपराह्न सत्र को नशामुक्ति कार्यक्रम एलीवेट के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री अभिजीत कुमार एवं अणुव्रत डिजिटल डिटॉक्स कार्यक्रम के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री जागृत कुमार ने सम्बोधित किया।

अधिवेशन के दूसरे दिन की शुरुआत अणुव्रत रैली के साथ हुई। इस अवसर पर अणुव्रत अनुशास्ता ने ऐसे अणुव्रत पुस्तकालय बनाने का आह्वान किया जहाँ हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सभी जाति, धर्म, समुदाय के लोग आ सकें। इससे पूर्व साध्वीप्रमुखाश्री ने कहा कि अणुव्रत के नियम छोटे-छोटे हैं लेकिन जीवन का रूपांतरण करने वाले हैं।

मुनि दिनेश कुमारजी ने कहा कि अणुव्रत ने जिस रूप में क्रांति की है, वह शांति के लिए है। अणुविभा के निवर्तमान अध्यक्ष और 'अणुव्रत' व 'बच्चों का देश' के संपादक संचय जैन ने संभागियों को सम्बोधित करते हुए कहा - हम कार्यकर्ताओं को यह सोचना है कि हम कैसे अणुव्रत को अधिक प्रभावी बना सकें? हम अणुव्रत दर्शन को समझें। हम केवल समाज बदलने की बात न करें। स्वयं में बदलाव आ रहा है या नहीं, इस पर भी ध्यान दें।

प्रताप दुगड़ अध्यक्ष निर्वाचित सायंकालीन सत्र में अनुदानदाताओं, प्रकल्प संयोजकों एवं श्रेष्ठ अणुव्रत समितियों व अणुव्रत मंचों को स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया। अंत में निर्वाचन अधिकारी ने 2024-26 के लिए वर्तमान टीम में वरिष्ठ उपाध्यक्ष कोलकाता प्रवासी व लाडनूं निवासी प्रताप सिंह दुगड़ के अणुविभा अध्यक्ष पद पर निर्वाचन की घोषणा की। वर्तमान प्रबंध न्यासी तेजकरण सुराणा के इस पद पर पुनर्निर्वाचन की घोषणा की गयी।

रात्रिकालीन सत्र में अणुव्रत अमृत क्विज का आयोजन किया गया, जिसका संचालन जिनेन्द्र कोठारी ने किया। अधिवेशन की सम्पन्नता 10 नवम्बर को प्रातःकालीन प्रवचन कार्यक्रम में अणुव्रत अनुशास्ता के पावन आशीर्वाद के साथ हुई।

अणुविभा द्वारा प्रदत्त सम्मान

अणुव्रत पुरस्कार

दलवीर भण्डारी
अंतरराष्ट्रीय न्यायालय के न्यायाधीश
पद्मभूषण

अणुव्रत गौरव सम्मान

के.एल. जैन पटावरी
शासनसेवी एवं प्रसिद्ध उद्योगपति

अणुव्रत लेखक पुरस्कार

डॉ. कुमारपाल देसाई
पद्मश्री

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
02 दिसम्बर- 08 दिसम्बर, 2024

दीपावली एवं 2551वें वीर निर्वाण संवत् पर मंगलपाठ के विविध आयोजन

तोशाम

जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में ज्ञानशाला प्रकोष्ठ द्वारा निर्देशित ज्ञान-मित्र विभाग के अंतर्गत तोशाम ज्ञानशाला द्वारा भगवान महावीर निर्वाण दिवस एवं दीपावली कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

ज्ञानमित्र द्वारा प्रेषित सामग्री का उपयोग करते हुए ज्ञानार्थियों हेतु Handwriting competition का आयोजन किया गया जिसमें कुल 12 ज्ञानार्थियों ने भाग लिया। मुख्य प्रशिक्षिका कमलेश जैन ने सभी बच्चों को भगवान महावीर एवं गौतम स्वामी की कहानी सुनाई। प्रशिक्षिका ज्योति जैन एवं बबीता जैन ने प्रश्नोत्तरी का संचालन किया। ज्ञानार्थी कृतिका एवं भूमि ने दीपावली के अवसर पर पर्यावरण विषय पर वक्तव्य दिया एवं पटाखों से होने वाले नुकसान के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किए।

चेन्नई

साध्वी डॉ. गवेषणाश्रीजी ने कहा- जैन धर्म में दीपावली का संबंध भगवान महावीर से जुड़ा हुआ है। यह पर्व दीपों का, उजालों का पर्व है। भगवान महावीर तीस वर्ष तक विदेह रहकर गृहवास में रहे। साढ़े बारह वर्षों तक उनका साधना काल रहा। उस साधनाकाल में अनेक संघर्ष, उपद्रव आदि आये पर भगवान महावीर उनमें अडिग रहे। जीवन के संध्याकाल में संलेखना स्वीकार कर ज्योति-ज्योति में विलीन हो गयी।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा- भगवान की अंतिम देशना रूप उत्तराध्ययन का वाचन इन दिनों में विशेष रूप से किया जाता है। साधारणतया लोग इन पुनीत अवसर पर लक्ष्मी, कुबेर आदि की भी पूजा करते है। आज के दिन ही धन्वंतरी का जन्म हुआ था, राम 14 वर्षों का वनवास पूर्ण कर अमावस्या के दिन ही अयोध्या आये थे। साध्वी मेरुप्रभा जी ने गीतिका प्रस्तुत की। साध्वी दक्षप्रभाजी के मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत हुईं। भगवान महावीर के संबद्ध मंत्रों का 13 घंटे तक अखंड जप भी किया गया।

गुवाहाटी

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में 2551वें वीर निर्वाण संवत् के शुभारम्भ के अवसर पर विशेष मंगलपाठ का आयोजन किया गया। जनसभा को संबोधित करते हुए मुनिश्री ने कहा- जैन धर्म अपने आप में महान है। महान इसलिए क्योंकि तीर्थंकर नेतृत्व करने वाले होते हैं। वे तीर्थ-संघ की स्थापना करते हैं। वर्तमान में प्रभु महावीर का शासन चल रहा है। उनके द्वारा बताए मार्ग पर चलने से जीवन का कल्याण होता है, आध्यात्मिक विकास होता है। तीर्थंकर की शक्ति अपार होती है, उनके स्मरण से हमारा मंगल होता है। देवी-देवता, ग्रह-नक्षत्र का दुष्प्रभाव कम होता है। तीर्थंकर परमात्मा के प्रति श्रद्धा रखने से मानसिक शांति की प्राप्ति होती है। मंत्रों के स्मरण से पापकर्म दूर होते हैं। अशुभ कर्म दूर तथा शुभ कर्मों का बंधन होता है। जीवन में वास्तविक सुख-शांति-समृद्धि चाहते हैं तो तीर्थंकर भगवान के प्रति प्रबल श्रद्धा रखनी चाहिए।

2551वें वीर निर्वाण संवत् के अवसर पर हम सभी अपने प्रति मंगल कामना करें कि मैं शारीरिक, मानसिक रूप से स्वस्थ रहता हुआ धर्मसंघ-जिनशासन की प्रभावना में योगभूत बनूंगा। भक्तामर, लोगस्स, णमोत्थुणं, उवसग्गहर स्तोत्र एवं विभिन्न मंत्र, श्लोक आदि का सामूहिक रूप से संगान किया। मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा- अपने आपको भावित करें कि ये मंगल मंत्र, श्लोक, स्तुति मेरे जीवन के कल्याण के निमित्त बनेंगी। मेरा मन, विचार, भविष्य सभी मंगलकारी बनें। मंत्र की शक्ति प्रबल होती है। प्रभु महावीर ने आत्मा की विशुद्धि के लिए साधना की, ध्यान-तप के साथ जुड़कर कर्मों का क्षय किया, वैसे ही हम सभी आत्मविकास के लिए पुरुषार्थ, प्रयास करते रहें। तेरापंथ युवक परिषद्, कोकराझार के सदस्यों ने गीत की प्रस्तुति दी।

रायपुर

दीपावली के उपलक्ष्य में कार्तिक कृष्ण अमावस्या के दिन आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि सुधाकर जी व मुनि नरेश कुमार जी के सान्निध्य में महामंगलकारी वृहद मंगलपाठ का आयोजन रायपुर स्थित श्री लाल गंगा पटवा भवन, टैगोर नगर के जय समवशरण में किया गया। विशाल जनमेदनी ने मुनि सुधाकर जी से शुभ मुहूर्त में दिव्य एवं शक्तिशाली मंत्रों से संयुक्त विघ्न विनाशक महामंगलकारी वृहद मंगलपाठ का श्रवण किया। भगवान महावीर के 2551 वें निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में सामायिक के साथ अनेक प्रभावी मंत्रों को समाहित करते हुए विशिष्ट मंत्र अनुष्ठान का आयोजन भी किया गया। मुनि सुधाकर जी ने उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को संबोधित करते हुए भगवान महावीर के जीवन प्रसंग से जुड़े अनेक प्रेरणादायक संदर्भों का उल्लेख कर बोधित करने का प्रयास किया। मुनि नरेश कुमार जी ने सुमधुर गीतिका का संगान किया।

मंड्या

साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में नव वर्ष की मंगल शुरुआत आगम की पवित्र वाणी, मंगल मंत्रों एवं मंगल पाठ के साथ हुई।

साध्वीवृन्द ने 'दीयों का त्यौहार दीवाली लगता बड़ा सुहाना है' गीत का सामूहिक संगान किया। नववर्ष का वृहद् मंगलपाठ सुनाते हुए आध्यात्मिक मंगल कामना करते हुए साध्वी श्री ने कहा- हमें शुभ भावों का दीप जलाना है यह दीपक अगली दीवाली तक जलता रहे। स्नेह, सौहार्द व प्रेम की भावना बढ़ती रही रहे, प्रेम का दीप सदा प्रज्वलित रहे।

पृष्ठ 12 का शेष

सम्यक्त्व के समान..

इसे श्रेष्ठ बनाने के लिए हमारे भीतर अच्छे संस्कार होने चाहिए। गुस्सा, आक्रोश, और गरीबी व्यक्ति को हिंसा और अपराध की ओर धकेल सकते हैं। लेकिन सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति जीवन में हो, तो हिंसा और अपराध कम हो सकते हैं। अणुव्रत भी यही संदेश देता है। कार्यक्रम में उधना पुलिस के डी.सी.पी. भगीरथ गढ़वी ने अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। मुनि वीतरागकुमारजी और समणी हर्षप्रज्ञाजी ने अपने विचार व्यक्त किए। ज्ञानशाला की सराहनीय प्रस्तुति हुयी। तेयुप से गौतम आंचलिया और महिला मंडल ने स्वागत गीत के माध्यम से अपने भाव व्यक्त किए। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि कुमारश्रमणजी ने किया।

बोलती किताब

कर्मवाद

ये दो प्रकार की अनुभूतियां हैं। एक है प्रीत्यात्मक अनुभूति और दुसरी है अप्रीत्यात्मक अनुभूति। प्रीत्यात्मक अनुभूति या संवेदना को राग और अप्रीत्यात्मक अनुभूति या संवेदना को द्वेष कहते हैं। प्रीती और अप्रीति के अतिरिक्त तीसरी कोई संवेदना नहीं होती।

कुछ व्यक्ति नहीं जानते कि उन्हें क्या करना है कुछ व्यक्ति जानते है पर करने मे समर्थ नहीं होते। कुछ व्यक्ति जानते है किंतु सही नही जानते। कुछ करते है पर सही ढ़ग से नहीं करते। इस प्रकार अनेक समस्याएं है और प्रत्येक व्यक्ति को किसी न किसी समस्या का सामना करना पड़ता हैं।

आध्यात्मिक विकास के क्रम मे हम जब आगे बढ़ते हैंए अभ्यास करते.करते जैसे मोह का वलय टूटता जाता हैए उसका प्रभाव मंद होता जाता हैंए तब तीसरी ग्रंथि का नाम है प्रत्याख्यानावरण। यह आवेग की तीसरी अवस्था है। इसके टूटने से विरति के प्रति व्यक्ति पूर्ण समर्पित हो जाता है।

वर्तमान जीवन को अच्छा करना और भावी जीवन को भी अच्छा करना यह है आर्यकर्म। इस आर्यकर्म की प्रेरणा जागे और हर व्यक्ति यह प्रयत्न करे कि मुझे अधमतम चिंतन में नहीं जाना है, अधम कोटि के चिंतन में भी नहीं जाना हैं, विमध्यम और मध्यम कोटि के चिंतन में भी नहीं जाना है, उत्तम पुरूष बनना है।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत आठवीं संस्कार कार्यशाला

टिटिलागढ।

अभातेममं निर्देशानुसार समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत आठवीं संस्कार कार्यशाला के लिए महिला मंडल टिटिलागढ स्थानीय शासकीय उच्च बालिका विद्यालय पहुंची। महाप्राण ध्वनि के प्रयोग के साथ कार्यशाला का प्रारंभ हुआ। अध्यक्ष बबीता जैन ने 'हेल्दी फूड हैबिट' विषय पर अपने विचार रखते हुए कहा कि हमें फास्ट फूड पदार्थों को खाने से बचना चाहिए ताकि हम अनेक बीमारी और रोग से अपना बचाव कर सकें। स्वास्थ्यवर्धक पदार्थ जैसे विटामिन, प्रोटीन, खनिज, पौष्टिक एवं फाइबर युक्त फल, सब्जी, अनाज का प्रयोग करें, जिससे हमारे शरीर को ऊर्जा मिले। हेल्दी फूड हैबिट्स पर इंग्लिश में अक्षांश जैन ने भी अच्छे टिप्स दिए। इस विषय पर बच्चों के बीच में एक स्पीच प्रतियोगिता रखी गई थी प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय आने वाले बच्चों को पुरस्कृत किया गया। भाग लेने वाले सभी बच्चों को भी पुरस्कृत किया गया। प्रधान शिक्षक सुभाष चंद्र दास द्वारा महिला मंडल को बहुत ही उपयोगी आठ सेशन के लिए प्रशंसा पत्र देकर तथा कविता पाठ के द्वारा खुशी एवं आभार प्रकट किया गया।

जीवन में समता धर्म की करें आराधना : आचार्यश्री महाश्रमण

उधना।
20 नवम्बर, 2024

संयम के सुमेरु, आचार्यश्री महाश्रमणजी का उधना प्रवास का तीसरा दिन। युगप्रधान आचार्य प्रवर ने मंगल देशना प्रदान करते हुए कहा कि अर्हत् वंदना हमारे यहां प्रतिदिन दो बार होती है—प्रातःकाल प्रतिक्रमण से पहले और सांयकाल प्रतिक्रमण के पश्चात्। इसमें आगम की कल्याणकारी वाणी का समावेश है।

अर्हत् वाणी का एक सूक्त है - 'समया धम्म मुदाहरे मुणि।' इसका अर्थ है कि समता को धर्म कहा गया है, और मुनि इस समता धर्म का प्रचार करें।

अर्हत् वंदना गीत में भी कहा गया है - 'धर्महैसमताहमारा,कर्मसमतामयहमारा। साम्य योगी बन हृदय में स्रोत समता का बहाए।'

अनुकूल या प्रतिकूल परिस्थितियों में समान भाव रखना चाहिए। हमारे हर कार्य में समता और व्यवहार में समानता होनी

चाहिए। संगठन में समानता पूर्ण व्यवहार होना चाहिए। कहीं विवेकपूर्ण असमानता भी हो सकती है, पर जीवन की न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति में समानता का प्रयास होना चाहिए। साधु संस्था में तो पानी की भी व्यवस्था की गई। हमारे धर्म संघ में मुनि स्वरूपचंद जी हुए। जयाचार्य तीन भाई दीक्षित हुए। स्वरूप चंद जी स्वामी, जीतमल जी स्वामी और भीम जी स्वामी और उनकी माताजी कल्लूजी भी दीक्षित हुए।

गुरुदेव श्री तुलसी ने विक्रम संवत 2031 के श्रीडूंगरगढ़ मर्यादा महोत्सव के गीत में मुनि स्वरूपचंद जी का नाम लिया था -

'संत सतयुगी मोजी वेणी, स्वरूप कालू मगन त्रिवेणी।'

आचार्यश्री ने विशिष्टता प्राप्त संतों मुनि खेतसीजी, मुनि मोजीरामजी, मुनि वेणीरामजी, मुनि स्वरूपचंदजी, मुनि कालूरामजी (रेलमगरा), और मुनि मगनलालजी के प्रसंगों का उल्लेख करते हुए उनकी संघ निष्ठा और समता धर्म की व्याख्या की।

मुनि स्वरूपचंदजी के अनुशासन सम्बन्धी दृष्टांत बताते हुए पूज्य प्रवर ने फरमाया कि पानी के प्रसंग में अनुशासन हीनता को लेकर उन्होंने एक मुनि के साथ आहार-पानी का त्याग कर दिया था। समता का एक अर्थ समानता हो सकता है। भोजन, कपड़ा, स्थान आदि के संदर्भ में समानता होनी चाहिए। समता का अर्थ केवल समानता नहीं है, बल्कि व्यवहार में निष्पक्षता और समान दृष्टिकोण अपनाना भी है। हमारे यहां बारी की व्यवस्था है, जो समानता का प्रतीक है। गृहस्थ जीवन में भी समानता का पालन होना चाहिए। संविभाग हो, असंविभाग नहीं। जैसे न्यायपालिका में न्याय के लिए छोटा-बड़ा कोई भेद नहीं होता, वैसे ही हमें जीवन में समता धर्म की आराधना करनी चाहिए। यह जीवन को कल्याणकारी बना सकता है।

कार्यक्रम में पूज्यवर के स्वागत में तेरापंथ किशोर मंडल ने गीत का संगान किया, कन्या मंडल ने भावपूर्ण प्रस्तुति दी। लोक तेज के संपादक कुलदीप सनाढ्य ने अपनी भावनाएं व्यक्त की। कन्या मंडल और ज्ञानशाला ने चौबीसी के गीतों की सुंदर प्रस्तुति दी। अभिलाषा बांठिया ने गीत के माध्यम से पूज्यवर का स्वागत किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि कुमारश्रमण जी ने किया।

इहलोक और परलोक में कल्याणकारी है श्रमण धर्म : आचार्यश्री महाश्रमण

उधना।
18 नवम्बर, 2024

जन-जन के आध्यात्मिक उद्धारक युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी सूरत के उपनगर उधना पधारे। महातपस्वी आचार्य प्रवर ने विशाल जनसमूह को पावन पाथेय प्रदान करते हुए फ़रमाया कि मानव जन्म प्राप्त होना अत्यंत महत्वपूर्ण है। मानव जीवन पाकर धर्म का श्रवण करने का अवसर मिलना एक दुर्लभ और अत्यंत शुभ बात है। यदि धर्म की बातें सुनने के बाद उन पर श्रद्धा हो जाए और वह श्रद्धा संयम में परिवर्तित हो जाए, तो जीवन का परम लक्ष्य प्राप्त हो सकता है।

आचार्यश्री ने बताया कि श्रमण धर्म संयम के क्षेत्र में पराक्रम का मार्ग प्रशस्त करता है। श्रमण धर्म की सच्ची जानकारी के लिए बहुश्रुतों की संगति करनी चाहिए। यह धर्म लोक में लाभकारी है, परलोक में भी कल्याण करता है और जीव को सुगति प्रदान करता है। श्रमण धर्म के ज्ञान हेतु प्रश्न पूछने में संकोच नहीं करना चाहिए। ज्ञान को बढ़ाने में प्रश्न पूछना एक अहम भूमिका निभाता है। जो प्रश्न पूछता है, उसे मोक्ष का मार्ग भी मिल सकता है।

आचार्य प्रवर ने आगे फ़रमाया कि जिसे तर्क शक्ति का ज्ञान नहीं है, वह मूक होता है। जिसे व्याकरण का ज्ञान नहीं, वह भाषा के क्षेत्र में अंधा है। जिसे शब्दकोश का ज्ञान

नहीं, वह बहरा है और जिसे साहित्य का ज्ञान नहीं, वह भाषा जगत में पंगु है। इसलिए प्रश्न पूछकर अर्थ को समझने का प्रयास करना चाहिए। जो व्यक्ति श्रमण धर्म प्राप्त कर लेता है, वह अपार संपदा प्राप्त करता है। यह महारत्न केवल भाग्यशाली व्यक्तियों को ही मिलता है। इसे प्राप्त कर अंत तक आराधना करते रहना चाहिए और जीवन को श्रमण धर्ममय बनाना चाहिए।

आचार्य प्रवर ने बताया कि एक अल्पश्रुत होता है और एक बहुश्रुत। जैसे सिंहनी का दूध योग्य पात्र में ही टिकता है, वैसे ही श्रमण धर्म की प्राप्ति के लिए पात्रता आवश्यक है। जब प्रत्याख्यानी चतुष्क का क्षयोपशम होता है, तब श्रमण धर्म की प्राप्ति होती है। पांच महाव्रतों का पालन करने वाले धन्य होते हैं। यदि गृहस्थ में साधुपन की क्षमता न हो, तो अणुव्रतों को स्वीकार करना चाहिए। व्रत और अणुव्रत गृहस्थ के लिए एक मध्य मार्ग है।

श्रावक धर्म को अपनाकर व्यक्ति श्रमण धर्म का उपासक बन सकता है। सामायिक करना श्रावक धर्म का एक अंग है। नव तत्वों को भलीभांति समझना आवश्यक है। बिना साधुपन के भावों में प्रवेश किए मुक्ति संभव नहीं है, इसलिए बहुश्रुतों की उपासना करनी चाहिए। दिल्ली की ओर विहार कर रहे मुनि अभिजीतकुमारजी एवं मुनि जागृतकुमार जी ने अपनी भावना व्यक्त की। पूज्यवर के स्वागत में निर्मलकुमार चपलोत ने अपने उद्गार व्यक्त किए।

उधना समाज द्वारा गीत की प्रस्तुति दी गई। एसएमसी नेता शशिबेन त्रिपाठी ने अपनी भावनाएं प्रकट की। कार्यक्रम का संचालन मुनि कुमार श्रमण जी ने किया।

संयम में सहयोग देना कहलाता है परमार्थ

चित्तौड़गढ़। मुनि प्रकाश कुमार जी के संयम पर्याय के 50 वर्ष की संपन्नता पर आयोजित समारोह में मुनि संजय कुमार जी ने जन मेदिनी को संबोधित करते हुए कहा कि जैन धर्म की दीक्षा स्वीकार करना ही एक बड़ी कसौटी है फिर तेरापंथ धर्म संघ में दीक्षित होना सबसे कठिन है। तेरापंथ के अनुशासन, मर्यादा में जिन्होंने 50 वर्ष बिताए, वह महत्वपूर्ण है। हम भाई-भाई का एक साथ 50 वर्ष तक साथ रहकर परस्पर सहयोग करना, चित्त समाधि में संभागी बनना, यह अनुकरणीय है। गृहस्थ में भाई-भाई सहयोग करते तो परार्थ संसारी सहयोग होता है। संयम में सहयोग देना परमार्थ कहलाता है।

मुनि प्रसन्न कुमार जी ने कहा कि इस जन्म में हम तीनों भाई का संयमी होना ही गर्व है। गृहस्थ भाई 50 वर्ष तक साथ-साथ रहें, यह तो दुर्लभ है। मुनि प्रकाश कुमार जी का जीवन संघर्षों से जुड़ा हुआ है। मौत के करीब से वापस लौटे हैं। दृढ़ संकल्प होने से महत्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त कर ली है। ज्योतिष विद्या में विशेष दक्षता हासिल की है। वे ध्यान, मंत्र सिद्धि, आहार संयम, दीर्घ समय से मौन साधना, हर शनिवार को 18 घंटे मौन साधना करते हैं। तेरापंथ धर्म संघ में साधु संतों में अब तक के इतिहास में सर्वाधिक 37 वैरागी तैयार कर गुरु चरणों में समर्पित कर दीक्षा दिलाने वाले बन गए। कई वैरागी अभी और तैयार हो रहे हैं। तेरापंथ धर्म संघ में तीनों भाइयों के संतों की जोड़ी एक ही है, साथ में एक भतीजा भी दीक्षित होने से एक ही परिवार के चार संत दीक्षित हैं।

मुनि प्रकाश कुमार जी ने गुरुदेव तुलसी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहा कि संसार के कीचड़ से निकालकर मुझे संयम रत्न प्रदान किया। मुझे वैराग्य की प्राप्ति केवल पहली बार मुनि संजय कुमार जी को देखकर हो गई और दूसरा निमित्त मां का एक वचन। संघर्ष बहुत आये, मृत्यु के मुंह में जाने से बचने का मुख्य कारण दृढ़ संकल्प था। संयोजन सीमा श्रीश्रीमाल ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
02 दिसम्बर- 08 दिसम्बर, 2024

सम्यक्त्व के समान नहीं है कोई रत्न : आचार्यश्री महाश्रमण

उधना।
19 नवम्बर, 2024

आर्हत् वांग्मय के व्याख्याता, आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फ़रमाया कि नौ तत्वों की जानकारी को एक काल्पनिक उदाहरण के माध्यम से समझा जा सकता है।

एक युवक संत के पास आया और पूछा - 'मैं कौन हूं?'

संत ने उत्तर दिया, 'तुम आत्मा हो, जीव हो, चैतन्यमय हो।'

युवक ने कहा, 'फिर ये मेरे हाथ-पैर क्या हैं? क्या ये भी जीव हैं?'

संत ने उत्तर दिया, 'हाथ-पैर शरीर का हिस्सा हैं। यह शरीर जीव से अलग है। हाथ-पैर आदि शरीर है, जो अजीव और अचेतन तत्व है। यह शरीर जीव के साथ जुड़ा हुआ है, परंतु यह स्वयं अजीव है।'

संत ने आगे कहा कि कर्मों के बंध के कारण यह शरीर जीव से जुड़ा होता है। यह बंध दो प्रकार के होते हैं—पुण्यात्मक और पापात्मक। यह बंध कराने वाला तत्व आश्रव है। बंध अपने आप नहीं होता। आश्रव से बचने के लिए संवर की साधना की जाती है। जितना संवर पुष्ट होगा, उतना ही आश्रव निष्प्रभावी होगा। पहले से बंधे हुए पाप कर्मों को दूर करने का उपाय तपस्या और निर्जरा है। निरंतर निर्जरा के माध्यम से मोक्ष प्राप्त होता है। मोक्ष के बाद आत्मा और शरीर अलग हो जाते हैं।

युवक ने फिर पूछा, 'इन नौ तत्वों के मूल प्रवक्ता कौन हैं?'

संत ने उत्तर दिया, 'इनके मूल प्रवक्ता अर्हत् हैं। वे धर्म के अधिकृत प्रवक्ता हैं।'

युवक ने कहा, 'तो मुझे धर्म के इन मूल प्रवक्ता अर्हत् से मिला दीजिए।'

संत बोले, 'इस धरती पर इस समय अर्हत् नहीं हैं। उनके प्रतिनिधि आचार्य होते हैं।'

संत ने आगे कहा, 'अर्हत् हमारे देव हैं और आचार्य हमारे गुरु हैं, जो तत्व और धर्म की शिक्षा देते हैं। वैसे हम संत भी धर्म की बात बताते हैं।'

युवक ने फिर प्रश्न किया, 'मुनिजी, यदि कोई नौ तत्वों को जान ले और देव, गुरु, और धर्म में श्रद्धा हो जाए, तो क्या होता है?'

संत बोले, 'यह स्थिति सम्यक्त्व कहलाती है। सम्यक्त्व जैसा न कोई रत्न है, न कोई मित्र, और न ही कोई बंधु। सम्यक्त्व से बड़ा कोई लाभ नहीं। यदि किसी व्यक्ति का दृष्टिकोण, ज्ञान, और चारित्र सम्यक् हो जाए, तो यही मोक्ष का मार्ग है।' झूठ, कपट और बेईमानी से पाप कर्मों का बंध होता है। आचार्य प्रवर ने फ़रमाया कि आस्तिक हो या नास्तिक, हर कोई वर्तमान मानव जीवन को मान्यता देता है। (शेष पेज 10 पर)

अर्हम्

मुनिश्री विजयराज जी का देवलोकगमन

जीवन परिचय

जन्म :	राजगढ़ (बीकानेर संभाग) में संवत् 1987 कार्तिक शुक्ला 13, मंगलवार को
माता-पिता :	लाडांजी-गोपीचंदजी मुसरफ ओसवाल
दीक्षा :	17 वर्ष की अविवाहित वय में संवत् 2004 कार्तिक शुक्ला 7 को आचार्यश्री तुलसी द्वारा रतनगढ़ में
ज्ञाति चारित्रात्मा :	मुनि सोहनलालजी (संसारपक्षीय चाचा)
साधना :	प्रतिदिन ध्यान, मौन, जप, स्वाध्याय, आसन आदि का नियमित क्रम।
सेवा :	मुनि सोहनलालजी टी.बी. एवं हड्डी फ्रैक्चर होने के कारण 8 वर्ष लूनकरणसर में स्थिरवासी रहे। मुनि विजयराजजी ने उनकी अन्तिम समय तक अच्छी परिचर्या की।
जीवन-विज्ञान महासंप्रसारक संबोधन :	संवत् 2070 फाल्गुन शुक्ला नवमी (10 मार्च 2014) आचार्य श्री महाश्रमणजी द्वारा पीलीबंगा में।
स्वर्गवास :	संवत् 2081 मार्गशीर्ष कृष्णा तृतीया (18 नवंबर 2024) को, जैन विश्व भारती, लाडनूं (सेवा केन्द्र) में लगभग 11:16 बजे।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।